मई २००१ Rs. 10/-

चन्दामामा

चन्दामामा

सम्पुट - १०४ मई २००१ सञ्चिका - ५

अन्तरङ्गम्

कहानियाँ

ज्ञानप्रद धारावाहिक

पौराणिक धारावाहिक

विशेष मनोरंजन

चित्र कथा

विशेष

इस माह का विशेष

वेताल कथा

भारत की गाथा

सास की बीमारी

यक्ष पर्वत

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K Press Pvt. Ltd., Chennai–600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No.82, Defence Officers Colony, Ekattuthangal, Chennai - 600 097. Editor: Viswam

BOSS

PIRANHA

LAMBADA

BUZZ

MISSILE

TERMINATOR

LIMBO

SALSA

Choose your Hero

Different minds think differently. Go different ways. Make different choices. What better excuse for making so many different bikes?

संस्थापक
चक्रपाणि, बी. नागि रेड्डी

उन्होंने आपकी पीड़ा महसूस की

वह अंधकारमय शुक्रवार का दिन जब गुजरात में आये भूकम्प से चारों ओर मृत्यु ही मृत्यु दिखाई देने लगी, जबकि देश गणतंत्र दिवस मना रहा था और लोग विजय-आनन्द में डूबे थे। लेकिन ज्यों ही उन्होंने इस दुर्घटना के बारे में सुना, वे सहायता के लिए दौड़ पड़े। और क्यों न जाते क्योंकि दुर्भाग्य उनके देशवासियों के ऊपर आ पड़ा था। जो पूर्णतः प्राकृतिक था और ऐसी आपत्ति के समय उनको सहायता की आवश्यकता थी।

कुछ भी हो, दुःख और आपदा के इस दृश्य ने प्रत्येक भारतीय के हृदय को विदीर्ण कर दिया और वे हमारे दूर और नजदीक के मित्रों के साथ एक सहायता कड़ी बनाने में जुट गए। यू.एस.ए. के राष्ट्रपति पद पर श्री जॉर्ज बुश अभी स्थापित ही हुए थे, जब उन्होंने कहा कि ''भूकम्प किसी राजनैतिक बंधन को नहीं जानता।'' ब्रिटिश प्रधानमंत्री श्री टोनी ब्लेयर ने भारत को आश्वासन दिलाया और कहा-''हम लोग जिस तरह से भी सहायता कर सकते हैं, करने के लिए तैयार हैं।'' पाकिस्तान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी जनरल मुशर्रफ ने भारत के प्रधानमंत्री को फोन किया और आशा जताई कि सम्भवतः यह वार्तालाप उस देश के साथ अच्छे संबंध स्थापित कर दे।

हम लोग उन देशों के प्रतिनिधियों की गणना कर रहे हैं, जो भारत की सहायता के लिए सामने आए। लेकिन टोकियो के उस छोटे से स्कूल में क्या हुआ ! जिसे दुबारा बताना आवश्यक है। छठवीं कक्षा में पढ़ने वाली १२ वर्ष की इसोना काकुची, जिसे भारत में घटी इस दुर्घटना का पता एक सप्ताह बाद चला, उसने अपने २० अन्य साथियों के साथ मिलकर अपने-अपने गुल्लकों को तोड़कर पैसा इकट्ठा किया और उसे अपने शिक्षक को सौंप दिया जिससे कि वे उन पैसों को भारत भेज सकें। ''हम आपकी पीड़ा को महसूस करते हैं'' इसी शीर्षक के साथ यह कहानी प्रकाशित हुई।

चन्दामामा परिवार और इसके पाठक हमारे इन मित्रों के प्रति आभारी हैं, जिन्होंने आवश्यकता के समय पर यह प्रमाणित कर दिया कि वे सच्चे मित्र हैं।

अपने भारत को जानो

प्रश्नोत्तरी

आप में से बहुत से लोग डाक-टिकटों को इकट्ठा करने और बहुत से सिक्के इकट्ठा करने में रुचि लेते होंगे। अब पता करो कि नीचे दिए कितने प्रश्नों का उत्तर तुम सही-सही जानते हो !

१. स्वतंत्रता का पहला डाक-टिकट क्या बताता है?

२. सबसे पहले किसका चित्र स्वतंत्रता टिकट पर छापा गया?

३. जनवरी २००१ को आरम्भ किए गए एक टिकट पर एक भारतीय नेता का चित्र है। वह नेता कौन थे?

४. भारत में सबसे पहले डाक-टिकट कब जारी किया गया?

५. किस वर्ष में भारत का पहला चित्रमय टिकट जारी किया गया? और किस अवसर पर?

६. भारत पहला देश है जहाँ हवाई डाक सेवा सबसे पहले आरम्भ हुई। पहली बार यह कब और कहाँ से आरम्भ हुई?

७. जब हम पता लिखते हैं तो साथ में पिन कोड भी लिखते हैं। इसका पूरा नाम क्या है? यह पद्धति भारत में कब आरम्भ हुई?

८. पिन कोड पद्धति के अंतर्गत भारत के कितने क्षेत्र विभाजित हैं?

९. भारत में कई व्यक्तिगत डाक पद्धतियाँ थीं। ब्रिटिश सरकार ने इस पर कब रोक लगायी?

१०. भारतीय डाक-टिकट में सबसे महंगा कौनसा है और क्यों?

११. विश्व के कई राष्ट्रों ने मिलकर एक भारतीय नेता के सम्मान में डाक-टिकट जारी किया था, वे नेता कौन हैं?

१२. राष्ट्रीय डाक-टिकट संग्रहालय कहाँ पर स्थापित है?

(इसका उत्तर अगले अंक में)

मार्च की प्रश्नोत्तरी का उत्तर

१. मेवार की राजकुमारी मीराबाई।

२. भक्त सूरदास।

३. चैतन्य महाप्रभु जिनका जीवनकाल १५वीं-१६वीं शताब्दी था।

४. द्वारका, ज्योतिरमठ, कांची, पुरी और श्रृंगेरी।

५. अव्वैयार।

६. संत कबीर, जिनका जीवन काल १५वीं और १६वीं शताब्दी था। उन्होंने अपने अनेक दोहों में कहा है कि 'ईश्वर एक ही है चाहे हम उसे अल्लाह या राम के नाम से पूजें।'

७. सिरडी के साईबाबा।

८. रामानुजाचार्य।

पाठकों के पत्र

लोकप्रिय 'चंदामामा' पत्रिका को आज से नहीं बल्कि बचपन से मैं पढ़ता आ रहा हूँ। इसकी हर कहानी, साज-सज्जा इतनी सुन्दर होती है, जिससे लगता है कि तस्वीर अब बोल देगी। सच कहिए तो यह 'बाल पत्रिका' एक अलग-थलग पत्रिका है। जिसे बच्चे हमेशा पसन्द करते हैं। यह सब आपके सुन्दर सम्पादन के कारण ही संभव हो सका है। जिसके लिए आप धन्यवाद के पात्र हैं।

डॉ. सूरज मृदुल, मुजफ्फरपुर.

नम्र निवेदन है कि आपका चन्दामामा मैं बचपन से लेकर आज भी उसी चाव से पढ़ता हूँ। मेरी उम्र ४० वर्ष की है। पढ़ने में बहुत ही आनन्द मिलता है। आज के चहल पहल व मशीनरी युग से अलग आपकी कहानियाँ हमें नई सीख देती हैं और परम्परा से मिलाती हैं। मैं बीच में आपके थोड़े बहुत अंक पढ़ नहीं पाया। परन्तु आज मैंने आपका मार्च २००१ का अंक पढ़ा तो बहुत दुःख हुआ। लगता है कि आपके पास कहानियाँ लिखने कि सामग्री खत्म हो गयी है। ऐसे युग में आपकी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है कि आप पाठकों को नये व पुराने रीति रिवाज के बारे में बताएँ। गलती हो तो क्षमा कीजिएगा।

जे.जे. बलोठा, मुम्बई.

'चंदामामा' को पढ़कर लगा कि इसकी कहानियाँ बच्चों में अच्छे संस्कार पैदा करने में सक्षम हैं। पौराणिक कथाएँ बच्चों को अपनी सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराती हैं।

शुभकामनाओं के साथ।

डॉ. ओमपंकज, मध्यप्रदेश.

चन्दामामा सम्पादकीय विभाग ने अपने पाठकों की प्रतिक्रिया जानने के उद्देश्य से पाठकों द्वारा भेजे गए पत्रों को नियमित रूप से पत्रिका में छापने का निर्णय लिया है। हमारा निवेदन है कि पाठकगण हमें अपने विचारों से अवगत कराते रहें। जिससे हम उनकी रुचियों को ध्यान में रखते हुए पत्रिका का प्रकाशन करें। *- सम्पादक*

KISHKINTA is the name of the legendary monkey kingdom in the Indian epic Ramayana, where fun and frolic reigns.
KISHKINTA THEME PARK, 25kms south of Chennai, is India's first themed amusement park. Spread across 120 acres of delightful greenery, gardens and lakes, this fun paradise is a must-visit spot in Chennai

for all kids from six to sixty !

India's No.1 Theme Park
Tambaram, Chennai.

Tel: 044 8256880, 8258988, 2367244. e-mail: kishkinta@eth.net
Visit us at www.kishkintaindia.com

A special gift for you along with this May issue of CHANDAMAMA
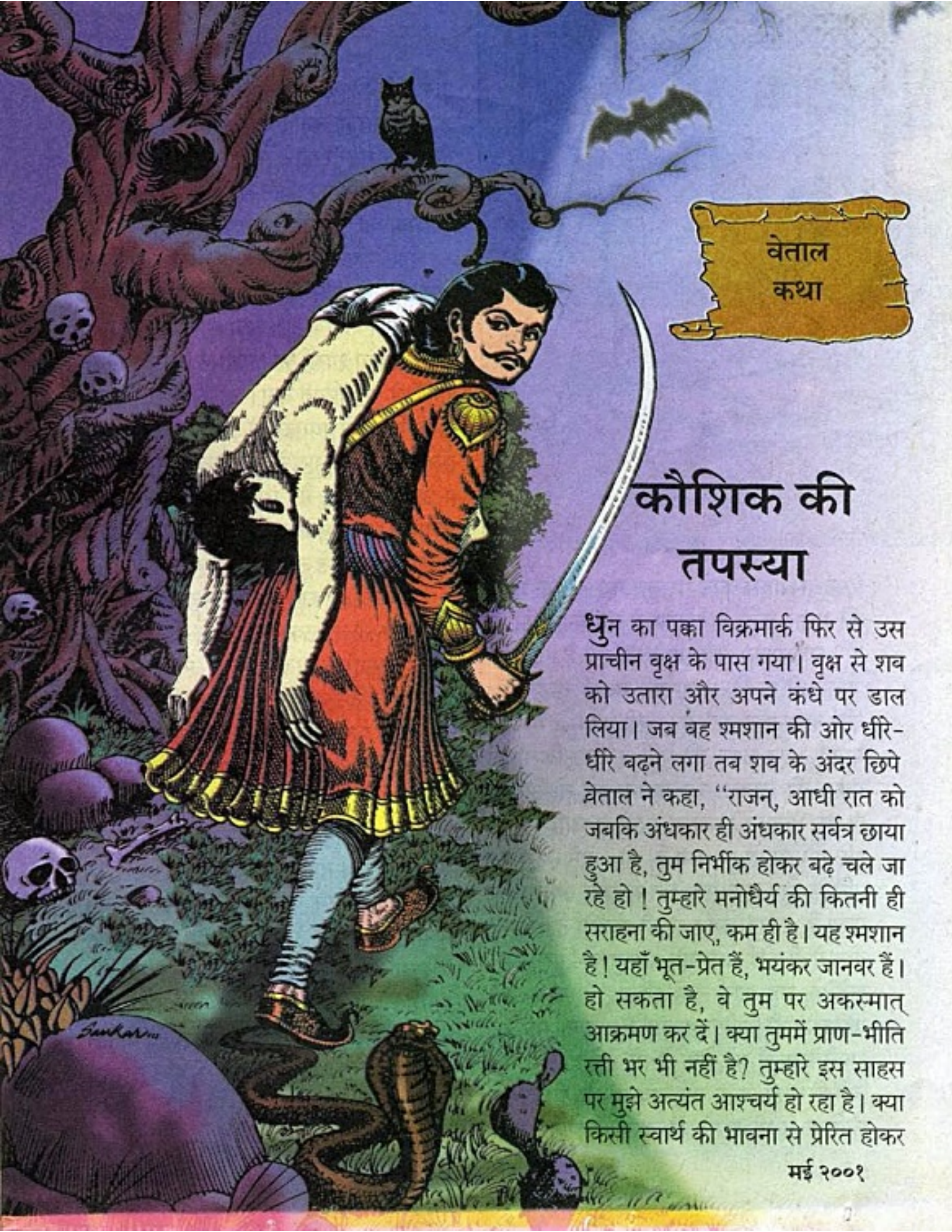
Name :...
School:...
Res. Address:...
....
....
Date of birth:...

FREE
TICKET TO KISHKINTA
WORTH RS.130/-

*Conditions apply: height below 4' 6"
Cannot be combined with any other offer. Not valid for group bookings One ticket per coupon. Valid upto 31 May 2001

कौशिक की तपस्या

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से उस प्राचीन वृक्ष के पास गया। वृक्ष से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। जब वह श्मशान की ओर धीरे-धीरे बढ़ने लगा तब शव के अंदर छिपे वेताल ने कहा, "राजन्, आधी रात को जबकि अंधकार ही अंधकार सर्वत्र छाया हुआ है, तुम निर्भीक होकर बढ़े चले जा रहे हो ! तुम्हारे मनोधैर्य की कितनी ही सराहना की जाए, कम ही है। यह श्मशान है ! यहाँ भूत-प्रेत हैं, भयंकर जानवर हैं। हो सकता है, वे तुम पर अकस्मात् आक्रमण कर दें। क्या तुममें प्राण-भीति रत्ती भर भी नहीं है? तुम्हारे इस साहस पर मुझे अत्यंत आश्चर्य हो रहा है। क्या किसी स्वार्थ की भावना से प्रेरित होकर

ऐसा दुस्साहस करने पर तुल गये हो या अन्यों की भलाई करने के उद्देश्य से यह कार्य कर रहे हो? यह संशय मुझे खाये जा रहा है। तुम तो जानते ही हो कि मैं तुम्हारी भलाई चाहता हूँ। कोई दुर्घटना न घट जांए, इसी का मुझे भय है। मानव अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए किसी भी प्रकार की रुकावट का सामना करे तो अवश्य ही उस मानव की प्रशंसा करनी ही चाहिए। मेरी दृष्टि में ऐसा मानव धन्य है, जो अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए तन, मन, धन से सदा प्रयत्नशील रहता है, अपनी जान से भी खेलता है। किन्तु बीच में ही कोई आत्मबंधु अथवा कोई गुरु उससे कहे कि यह कार्य तुम्हें शोभा नहीं देता, इसे यहीं छोड़ दो ! और वह उनकी बातों को मानकर अपने प्रयत्नों को रोक दे तो मेरी दृष्टि में वह विवेकी नहीं कहा जा सकता। बहुत पहले कौशिक ने भी दूसरों की बातों में आकर ऐसी ही ग़लती की। मैं नहीं चाहता कि तुम भी उसकी तरह अविवेकी बनो। तुम्हें सावधान, करने के लिए और ग़लती करने से बचाने के लिए उसकी कहानी सुनाऊँगा। ध्यान से सुनो।'', फिर वेताल कौशिक की कहानी सुनाने लगा।

बहुत पहले की बात है। गुरुमुख नामक एक पंडित के गुरुकुल में कौशिक नामक विद्यार्थी विद्याभ्यास कर रहा था। बीस साल की उम्र में ही उसने समस्त शास्त्रों का अध्ययन किया और उन शास्त्रों में वह पारंगत बना। उसकी समझ में नहीं आया कि आगे क्या करे तो उसने गुरू गुरुमुख से सलाह मांगी। तब गुरू ने कहा ''पुत्र, तुममें अद्भुत व असमान बुद्धि है। परंतु तुममें एकाग्रता का अभाव है। कुछ समय तक तपस्या करो। भगवान प्रत्यक्ष होकर तुम्हें तुम्हारा कर्तव्य सुझायेंगे।''

कौशिक दंडकारण्य पहुँचकर एक विशाल वट वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या में लीन हो गया। उसकी तपोदीक्षा अद्भुत थी। सबेरे ही उठकर वह दैनिक दिनचर्याओं से निवृत्त हो जाता था और कंद, मूल, फल खाकर तपस्या करने बैठ जाता था। सूर्यास्त के बाद वह फिर से फल खा लेता था और सो जाता था। इस प्रकार सात सालों तक उसने कठोर तपस्या की, फिर भी भगवान प्रत्यक्ष नहीं हुए।

देश में पर्यटन करते हुए गुरुमुख ने अपने शिष्य कौशिक को उस वट वृक्ष के नीचे देखा। कौशिक ने अपनी दुख भरी कहानी गुरु को सुनायी।

''तपस्या करने के लिए एकाग्रता की नितांत आवश्यकता है। कहीं इसका अभाव तुम्हारी तपस्या में बाधक तो नहीं बन रहा है?'' गुरुमुख ने पूछा।

"बिल्कुल नहीं गुरुवर", कौशिक ने कहा।

"ठीक है। मैं मणिपाल नामक एक राजा से मिलने जा रहा हूँ। वहाँ से लौटने के बाद तुम्हारी समस्या का परिष्कार-मार्ग सुझाऊँगा", यों कहकर गुरुमुख वहाँ से चला गया।

उसी समय राजा मणिपाल के सम्मुख एक विकट समस्या उपस्थित हो गयी। समर्थ कोषाधिकारी की आकस्मिक मृत्यु के कारण नये कोषाधिकारी की नियुक्ति उसके लिए गंभीर समस्या बन गयी।

पहले का कोषाधिकारी खज़ाने के सामने के घर में रहता था और अपनी पत्नी व संतान के साथ आराम से जीवन गुज़ार रहा था। चाहे वह गाढ़ी निद्रा में भी क्यों न हो, उसे पता चल जाता था कि खज़ाने के इर्द-गिर्द क्या हो रहा है? इसका कारण एकाग्रचित्त होना था। विराग, भोग और वेग ने भी दावा किया कि वे भी ऐसे ही एकाग्रचित्त के हैं और उन्हें कोषाधिकारी बनाया जाए। राजा उनकी इस माँग पर कोई निर्णय नहीं ले पा रहा था।

उन तीनों में से विराग संगीत विद्वान था, भोग महान भक्त था तो वेग मेहनती था। तीनों अपने को विश्वासपात्र कहते थे। राजा इसी सोच में मग्न था कि इन तीनों में से कौन चुना जाए, ठीक उसी समय पर गुरुमुख वहाँ आये। राजा मणिपाल ने सानंद उनका आदर-सम्मान किया और अपनी समस्या बतायी। राजा ने गुरुमुख से कहा, "आप सही समय पर आ गये। मुझे कोई उपाय बताकर इस समस्या से उबारिये।"

गुरुमुख ने तीनों को बुलाया और उनसे कहा, "आप तीनों की एकाग्रता की परीक्षा लेना चाहता हूँ। दंडकारण्य में विशाल वट वृक्ष के

नीचे मेरा शिष्य तपस्या कर रहा है। तपस्या के समय विराग को चाहिए कि वह दो घंटों तक गीत गाता रहे। एकाग्रता के साथ गाया जाए तो दो घंटों के अंदर पचीस गीत गाये जा सकते हैं। विराग जब वहाँ गीत गाता रहेगा, तब भोग को चाहिए कि शिव की अर्चना के लिए वह काँटों के फूल तोड़कर लाये। एकाग्रता हो तो दो घंटों के अन्दर ही अपने को काँटों से चुभने से बचाकर सौ फूल तोड़े जा सकते हैं। उसी तरह वेग को भी उसी समय पर वहाँ के वृक्ष की जड़ को कुल्हाड़ी से चीरना होगा और पचास लकड़ियाँ इकट्ठी करनी होंगी।"

तीनों ने गुरुमुख की इस शर्त को स्वीकार कर लिया।

दूसरे ही दिन राजा, उसके परिवार के कुछ सदस्य, गुरुमुख और वे तीनों दंडकारण्य के उस वट वृक्ष के पास पहुँचे। उस समय कौशिक

की तरह चहचहाया, चिल्लाता रहा कि बाढ़ का पानी बढ़ा आ रहा है, फिर भी उन तीनों पर इनका कोई असर नहीं पड़ा।

दो घंटों के पूरे होते-होते विराग ने पचीस गीत गाये। भोग ने सौ पुष्प तोड़े। वेग ने पचास लकड़ियाँ काटी। ''तीनों ने अपना-अपना काम ठीक-ठाक किया। आप अब कृपया बताइये कि इनमें से योग्य कौन है?'' राजा मणिपाल ने गुरुमुख से पूछा।

गुरुमुख ने मंद-मंद मुस्कुराते हुए तीनों को अपने पास बुलाया और उनसे कहा, ''तुम तीनों की एकाग्रता की एक और भिन्न परीक्षा है। तुमको बताना होगा कि जब तुम लोग काम पर लगे हुए थे, उस समय तुम्हारे ईर्द-गिर्द क्या हुआ? उत्तर सही होना चाहिए!''

आँखे मूंदकर तपस्या में तल्लीन थे।

तीनों स्पर्धालु अपने-अपने कामों में लग गये।

राजा मणिपाल ने गुरुमुख से कहा, ''आपके शिष्य की तपस्या बड़ी ही कठोर व अद्भुत है। उसके पास सबेरे से लेकर इतना शोरगुल हो रहा है, फिर भी कोई खलल नहीं पहुँचा और वह ध्यानमग्न ही रहा।''

गुरुमुख ने मुस्कुराकर कहा, ''हमें मेरे शिष्य की परीक्षा नहीं लेनी है। हमें परीक्षा लेनी चाहिए, विराग, भोग और वेग की एकाग्रता की।'' कहकर उसने एक सैनिक से सीटी बजाने के लिए कहा। फिर भी किसी ने मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने इस पर ध्यान ही नहीं दिया। गुरुमुख के कहे अनुसार कुछ सैनिक उन तीनें के चारों ओर खड्ग-युद्ध करते हुए घूमते रहे। फिर भी वे यथावत रहे। इसके बाद एक सैनिक शेर की तरह गरजा, पक्षी

पर विराग, भोग व वेग को इस बात का पता ही नहीं था कि उनके ईर्द-गिर्द क्या हुआ। न ही उन्होंने सैनिक की सीटी सुनी, न ही सैनिकों के खड्ग-युद्ध को देखा, न ही उन्हें पक्षियों की चहचहाहट सुनायी पड़ी। विराग की संपूर्ण दृष्टि गीतों पर, भोग की दृष्टि पुष्पों पर तथा वेग की दृष्टि लकड़ियों पर केंद्रित थी। उनकी ऐसी एकाग्रता पर स्वयं राजा चकित रह गया।

''इन तीनों में से योग्य कौन है, इसका निर्णय बुद्धि-बल पर नहीं किया जा सकता'' इसके लिए आवश्यक तपोशक्ति मेरे शिष्य में है'', कहते हुए गुरुमुख ने कौशिक का नाम दो बार दुहराया।

किन्तु कौशिक हिला-डुला नहीं। इस प्रकार दस बार पुकारकर गुरुमुख चुप रह गया।

राजा, कौशिक की एकाग्रता पर सन्न रह गया। उसका अभिनंदन करने शाम तक वह वहीं रहा। सूर्यास्त होते ही कौशिक ने आँखें खोलीं।

"हमारे कारण कहीं तुम्हारा तपोभंग तो नहीं हुआ?" गुरुमुख ने पूछा। कौशिक ने सानंद सिर हिलाते हुए कहा, "गुरुवर, प्रातःकाल जब मैंने तपस्या का प्रारंभ किया तब दो हाथियों को एक सिंह ने खदेड़ा। फिर इसके बाद चार हिरणें यहाँ चारा चरती रहीं। एक आदमी ने पच्चीस गीत गाये। एक ने बीच-बीच में आह भरते हुए काँटों के फूल तोड़े। एक ने लकड़ियाँ काटीं। किसी ने सीटी बजायी। कोई खड्ग-युद्ध कर रहे थे। शेर की गरज, पक्षियों का कलरव सुनता रहा। फिर आपने दस बार मेरा नाम ले-लेकर मुझे पुकारा। इस प्रकार मेरी एकाग्रता में भंग पहुँचानेवाले काम होते रहे, फिर भी मैं बिना हिले-डुले सूर्यास्त तक तपस्या में मग्न रहा। मेरा विचार है कि आपको मेरी एकाग्रता पर विश्वास हो गया होगा"।

शिष्य के इस उत्तर पर गुरुमुख ने मुस्कुराते हुए राजा से कहा, "राजन् मुझे ज्ञात है कि आप सूक्ष्मग्राही हैं। विराग, भोग, बेग की एकाग्रता के साथ-साथ मेरे शिष्य की तपस्या के बारे में अपने सुन लिया। खज़ाने के सामने का घर मेरे शिष्य को दीजिए और उसे कोषाधिकारी के पद पर नियुक्त कीजिए। पत्ता भी हिले तो मेरा शिष्य सुन लेगा और खज़ाने की रक्षा करेगा।"

राजा ने अपनी स्वीकृति दे दी। पर कौशिक निराश होकर "गुरुवर" कहकर संबोधित करते हुए कुछ कहने ही वाला था कि गुरुमुख ने उसे टोका और कहा, "पुत्र, मेरी हार्दिक इच्छा है कि तुम मणिपाल राजा के कोषाधिकारी बनो, अपने सामर्थ्य को साबित करो और गृहस्थाश्रम में प्रवेश करके सुखपूर्वक जीवन बिताओ। इससे तुम्हारा और राज्य का भी भला होगा।" कहकर वह अपने गुरुकुल पहुँचने निकल पड़ा।

वेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद कहा,
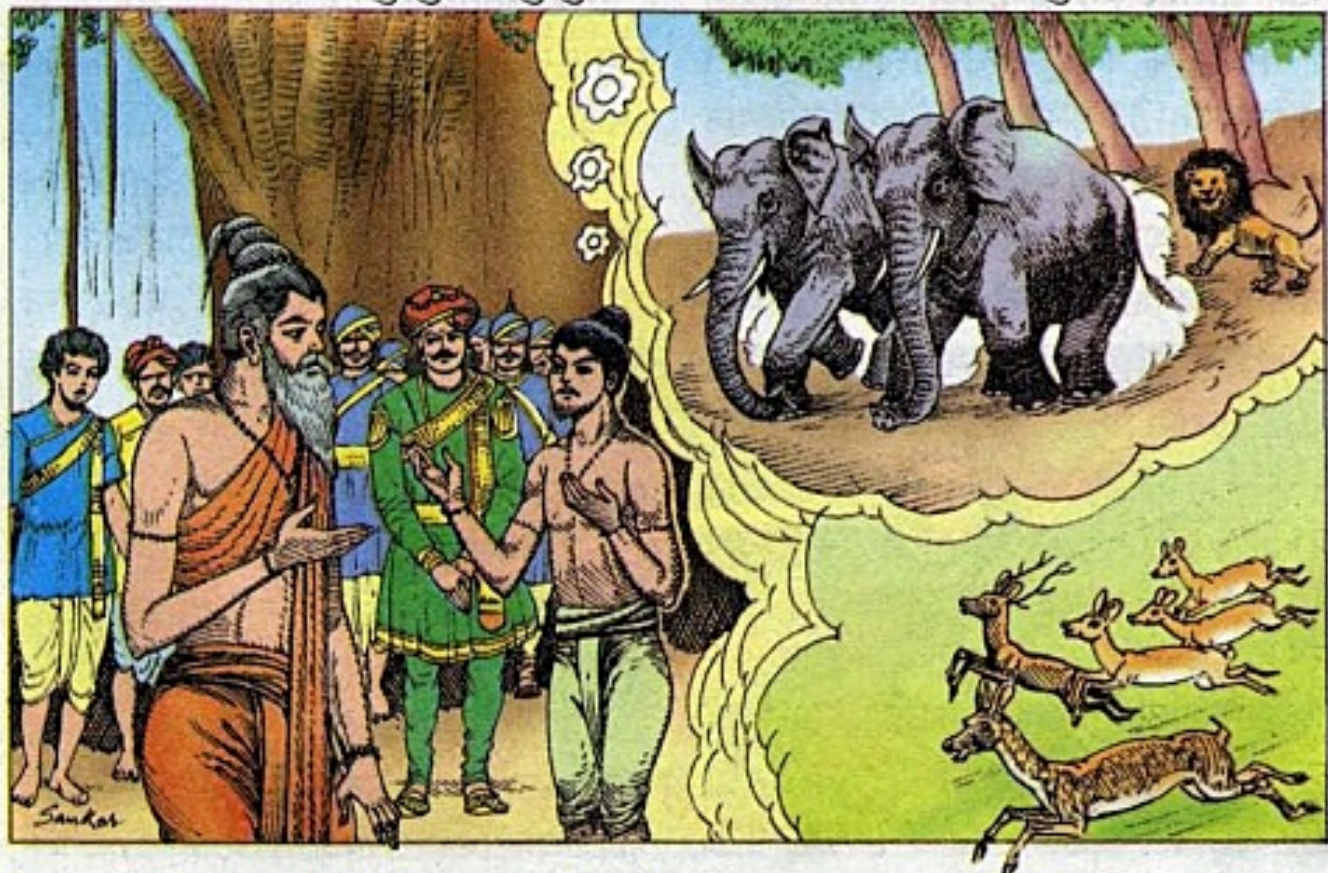
''राजन्, गुरुमुख ने राजा मणिपाल को जो सलाह दी, वह युक्तियुक्त व विवेकपूर्ण नहीं लगती। समस्त शास्त्रों में पारंगत, भगवान के दर्शन के लिए कठोर तपस्या में मग्न कौशिक को कोषाधिकारी बनाने की सिफारिश करना भी अनुचित लगता है, समयोचित नहीं लगता। साथ ही मुझे लगता है कि एकाग्रता के धनी विराग, भोग व वेग के साथ उसने बड़ा अन्याय किया। मैं तो कहूँगा कि उसने उनका अपमान भी किया। पक्षपात के साथ व्यवहार किया। राजा को सूक्ष्मग्राही कहकर उसकी चापलूसी की और गुरुमुख ने अपना काम बना लिया। इसके पीछे छिपा अंतरार्थ क्या है? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी मौन रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे।''

बिक्रमार्क ने कहा, ''कोई भी व्यक्ति अगर अपनी वृत्ति में अग्र श्रेणी तक पहुँचना चाहता हो तो इसके लिए एकाग्रता की अत्यंत आवश्यकता है। इसके लिए केवल बुद्धिमान होना पर्याप्त नहीं है। वह विराग, भोग, वेग जैसे व्यक्तियों में स्पष्ट गोचर होता है। किन्तु तपस्या करके महान कार्य साधने की इच्छा रखनेवाले कौशिक में इस एकाग्रता का अभाव है। किसी भी विषय को स्पष्ट रूप से समझना अलग है और अपने कार्य की पूर्ति के लिए उसे मोड़ना अलग है।

ये दोनों अलग-अलग कौशल हैं। कौशिक में न ही ऐसे गुण हैं और न ही यह कौशल है। इसी कारण तपस्या में लीन रहते हुए भी कौशिक इर्द-गिर्द होते हुए छोटे-छोटे विषयों पर भी ध्यान देता है, उन्हें याद रखता है। ऐसा व्यक्ति ही कोषाधिकारी बनने के लायक है। इस पद के लिए जिन तीनों ने आशा की, वे अपनी-अपनी वृत्तियों में अवश्य ही महान एकाग्रचित्त हैं। पर उनकी शक्ति व सामर्थ्य उन-उन वृत्तियों तक ही सीमित हैं। इसलिए वे उस पद के लिए सर्वथा अयोग्य हैं।

गुरुमुख को ज्ञात था कि उसने थोड़ी-बहुत बातें जो राजा से कहीं, उन्हें राजा समझ सकता है, उनके अंतरार्थ को ताड़ सकता है। इसी कारण गुरुमुख ने, राजा मणिपाल को सूक्ष्मग्राही कहकर उसकी प्रशंसा की।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और पुनः वृक्ष पर जा बैठा।

- आधार ''वसुंधरा'' की रचना

यक्ष पर्वत

5

(खड्गवर्मा एवं जीवदत्त ने सिंह को एक और शिथिल भवन की ओर खदेड़ा और उस भवन से बाहर निकलने के लिए रास्ता ढूँढ़ने लगे। उन्होंने देखा कि कमरे में अनाज के कितने ही बोरे भरे पड़े हैं। उन्होंने उनमें आग लगा दी। इतने में बगल के कमरे से उन्हें किसी की चिल्लाहट सुनायी पड़ी। वहाँ जाकर देखा तो एक वृद्ध को उस छोटे-से कमरे में बंद पड़ा पाया।)

खड्गवर्मा और जीवदत्त को देखते ही उस वृद्ध ने उनसे पूछा, ''तुम दोनों कौन हो? लगता तो नहीं है कि तुम उस चोर पुजारिनी के शिष्य हो। तुम जो भी हो, मेरी रक्षा करो। बग़ल के कमरे में धान जल रहा है। उसकी गर्मी से दीवार भी गरम हो गयी है और मेरा शरीर जला जा रहा है।''

''थोड़ी ही देर में कमरे की छत टूटकर गिरनेवाली है'', कहते हुए जीवदत्त वृद्ध के पास आया। अपने दंड से उसने वृद्ध के हाथों में बंधी बेड़ियाँ तोड़ डाली। फिर वह उसे बाहर ले आया।

वृद्ध ने बड़ी ही आतुरता से चारों ओर अपनी नज़र दौड़ायी और कहा, ''लंबे अर्से के बाद मुझे आज़ादी मिली है। क्या अब भी वह चोर पुजारिनी इस शिथिल नगर में अपना शासन चला रही है? तुमने तो बताया नहीं कि तुम लोग कौन हो?''

जीवदत्त ने वृद्ध को और आगे कहने से रोका और पूछा, ''तुम्हारे जीवन का पुराना इतिहास सुनने के लिए हमारे पास अब समय नहीं है। हम पुजारिनी के हमले से बचकर जंगल पहुँचना चाहते हैं। तुम यहीं रहना चाहोगे या हमारे साथ जंगल आना चाहते हो? पहले यह तय कर लो''।

बूढ़ा मांत्रिक क्षण भर के लिए मौन रह गया और फिर कहने लगा, ''बदला लिए बिना, उस चोर पुजारिनी का वध किये बिना किसी भी हालत में मैं यहाँ से नहीं निकलूँगा। मुझे इस दयनीय हालत में देखकर अवश्य ही मेरे पुराने शिष्य मेरा साथ देंगे।

उनकी सहायता लेकर उस नीच पुजारिनी के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा। उन टुकड़ों को चीलों और गिद्धों को फेंकने के बाद ही दम लूँगा।''

जीवदत्त उस बूढ़े से कुछ कहने ही वाला था कि इतने में पुजारिनी, मांत्रिक तथा जटावाली भूतनी वहाँ अचानक आ धमके। पुजारिनी बूढ़े को देखकर ठठाकर हंसती हुई बोली, ''वाह, यह बूढ़ा सियार कालकोठरी से बाहर आ गया ! इन सबको पकड़ लूँगी और महाभूत पर बलि चढ़ा दूँगी।'' कहती हुई वह आगे बढ़ने लगी।

खड्‌गवर्मा ने तुरंत धनुष पर बाण चढ़ाया और पुजारिनी को निशाना बनाते हुए कहने लगा, ''अरी पुजारिनी, एक भी क़दम आगे बढ़ाओगी तो यह बाण तुम्हारे सिर को धड़ से अलग कर देगा। सावधान !''

पुजारिनी के शिष्यों में से एक ने अपने हाथ में धारण किये हुए शूल को फुर्ती से घुमाया और कहा, ''हे महाशक्ति पुजारिनी, इस बूढ़े पुजारी को तथा इन दोनों नये युवकों को अपनी मंत्रशक्ति से भस्म कर दो।''

''नहीं, मैं इन्हें इतनी आसानी से भस्म करनेवाली नहीं हूँ। तीनों को ले जाकर महाभूत के पैरों पर बलि चढ़ानी है।'', कहती हुई बग़ल में ही खड़े मांत्रिक और जटावाली भूतनी से पुजारिनी ने कहा, ''अरे, खड़े-खड़े क्या देख रहे हो? सबको पकड़ लो।''

उसकी बातों पर जीवदत्त हँस पड़ा और बोला, ''अरे, ऐ विकृत भूत, यह भी पता नहीं चलता कि तुम भूतनी हो या भूत! खड़े क्यों रह गये ! हमें पकड़ो तो सही, फिर देखना क्या होता है।''

जटावाली भूतनी डरी हुई मांत्रिक से बोली, ''गुरु, इन दोनों को पकड़कर निगल डालूँ?''

''शिष्य, ऐसा मत कर, महापुजारिनी उन्हें सजीव पकड़ने की आज्ञा दे रही हैं। हम जल्दबाजी में कुछ का कुछ न कर बैठें'', मांत्रिक ने कहा।

तब वृद्ध पुजारी ने ऊँचे स्वर में कहा, ''अब

उस गुरु द्रोहिणी के पास कोई मंत्र शक्ति नहीं रह गयी। उसकी सारी शक्तियाँ मैंने छीन ली हैं।''

''यह सरासर झूठ है। इस बूढ़े सियार की बातों का विश्वास मत कर'', कहती हुई वह बूढ़े पुजारी की ओर बढ़ने लगी।

'ठहर', कहते हुए खड्गवर्मा ने उसके हाथ को निशाना बनाकर बाण छोड़ा। बाण के लगने से पुजारिनी के हाथ में जो दंड था, नीचे गिर गया। वहाँ उपस्थित दो शिष्य भयभीत हो चिल्लाने लगे, ''पुजारिनी की मंत्रशक्ति ग़ायब हो गयी। अब वृद्ध पुजारी ही हमारे गुरु हैं''।

इतने में कुछ और शिष्य वहाँ आये। वृद्ध पुजारी खुश होता हुआ बोला, ''वाह, महाभूत, कितने सालों के बाद मेरे शिष्यों ने सच जाना और तुम उन्हें अंधकार से प्रकाश में ले आये। पहले की तरह भविष्य में भी तुम पर प्राणियों की बलि चढ़ाता रहूँगा''। दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ अपने दोनों हाथ उसने ऊपर उठाये।

जीवदत्त ने वृद्ध मांत्रिक को अपनी कनखियों से देखा और खड्गवर्मा से कहा, ''खड्ग, यह वृद्ध मांत्रिक भी पुजारिनी की तरह क्रूर और दुष्ट लगता है'' फिर वहाँ जमा हुए शिष्यों से उसने कहा, ''आपकी अंदरूनी बातों में हम दख़ल देना नहीं चाहते। आपस में तुम ही तय कर लो।''

इतने में वृद्ध पुजारी के पक्ष के शिष्य व पुजारिनी के पक्ष के शिष्य शोर मचाते हुए

एक दूसरे को मारने-पीटने लगे।

यह दृश्य देखकर खड्गवर्मा ने कहा, ''जीव, इस लड़ाई-झगड़े में दोनों चोर मांत्रिक और उनके शिष्य शायद मर जाएँगे।''

''मरें तो मरने दो। इन शिथिल भवनों में बैठे भूखे सिंह को ही सही, कुछ समय तक खाने को मिलेगा।'' जीवदत्त ने कहा।

इसके बाद खड्गवर्मा ने तलवार चमकाते हुए कहा, ''अरे मांत्रिक, अपनी जटावाली भूतनी से कहो कि वह हमें यहाँ से बाहर जाने का मार्ग दिखाये।''

''अवश्य'', कहते हुए मांत्रिक आगे बढ़ा। पिछली रात को शिथिल नगर में जिस सुरंग से वे आये, उसी सुरंग से गुज़रते हुए वे गुफा-द्वार के पास पहुँचे।

गुफ़ा से नीचे आ जाने के बाद उन्होंने चारों

और जीवदत्त उसकी पोशाक को देखकर भांप गये कि वह लुटेरों में से एक है।

जीवदत्त ने लुटेरे के पास आकर उससे पूछा, ''अरे ऐ लुटेरे, तुम तो बड़े भाग्यवान हो। इतने ऊँचे पहाड़ से गिरने के बाद भी सही सलामत हो! ऊँट मौत से लड़ रहा है और वाह, तुम्हें कुछ नहीं हुआ!''

लुटेरा भय से कांपता हुआ बोला, ''साहब, मुझे मत मारिए। गण्डक मृग जातिवालों की फ़सलों को काटनेवालों में से मैं नहीं हूँ। सच और झूठ स्वर्णाचारी से पूछने पर आपको मालूम हो जाएँगे।''

उसकी बातें सुनते ही खड्गवर्मा और जीवदत्त आश्चर्य में डूब गये। अब हमें मालूम हो गया कि स्वर्णाचारी जिन्दा है और वह लुटेरों के साथ है।

तलवार चमकाते हुए खड्गवर्मा ने उससे पूछा, ''गण्डक मृग जातिवालों की फ़सल काटनेवालों में से तुम अगर नहीं हो तो तुम्हें कैसे मालूम हो गया कि हम उनके पक्ष के है?''

''आपके बारे में जंगल में मिले अपने दोस्तों से मुझे पूरी जानकारी मिली है। आपके वस्त्र व हथियारों को देखते ही मैं पहचान गया। मेरा कहा सच मानिये'', लुटेरे ने अपने सिर पर हाथ रखते हुए क़सम खायी।

''वाह, लगता है तुम बुद्धि में बृहस्पति हो। गुरुकुल की स्थापना करके शिष्यों को विद्या-बोध कर सकते थे न? लुटेरों के इस गिरोह में शामिल होने की क्या ज़रूरत आ पड़ी? उन पत्थरों और कंकडों को ऊँटों पर चढ़ाकर वे

तरफ़ अपनी नज़र दौड़ायी। फिर मांत्रिक से कहा, ''अब आप लोग अपने शिथिल नगर लौट जाइये और महाभूत की आराधना भक्तिपूर्वक कीजिए''।

''बहुत अच्छी बात कही वीरों। इस जन्म में ही नहीं बल्कि अगले जन्म में भी महाभूत की आराधना में लगे रहेंगे। हम प्राणियों को इससे बढ़कर और क्या चाहिए?'', यों कहकर मांत्रिक व जटावाली भूतनी वहाँ से निकले।

इतने में वहाँ शोरगुल मचने लगा। एक ऊँट और उसपर बैठा सवार, पर्वत के आंचल से फिसलते हुए उल्टे नीचे गिरने लगे।

खड्गवर्मा और जीवदत्त दौड़े-दौड़े उस तरफ़ गये। ऊँट के पैर टूट गये और वह दर्द से छटपटाने लगा। वह पानी पर लुढ़क रहा था। उसपर सवार आदमी घायल होकर कराह रहा था। खड्गवर्मा

जा रहे थे। कहाँ ले जा रहे थे और क्यों?'', खड्गवर्मा ने पूछा।

''महाशय, हमारे सरदार राजधानी और किले का निर्माण करने जा रहे हैं। स्वर्णाचारी ने इसके लिए आवश्यक योजना बनायी। उन्हीं की आज्ञा के अनुसार पत्थर और कंकड उस प्रदेश में पहुँचा रहे हैं।'' लुटेरे ने कहा।

जब वे तीनों बातचीत में मशगूल थे तब पहाड़ पर से लुटेरों में से चार लोगों ने उन्हें देखकर पहचान लिया। उन्होंने यह बात स्वर्णाचारी से बतायी। स्वर्णाचारी की खुशी का ठिकाना न रहा। वह चार लुटेरों के साथ वहाँ पहुँचा।

जीवदत्त ने हंसते हुए स्वर्णाचारी की पीठ थपथपायी और कहा, ''स्वर्णाचारी, कैसे हो? लगता है, धीरे-धीरे इन लुटेरों के नेता बन गये।''

उसकी बातें सुनकर थोड़ी देर के लिए वह स्तंभित रह गया। पर अपने को संभालते हुए उसने कहा, ''माफ़ कीजियेगा। लाचार होकर मैं लुटेरों के सरदार समरबाहु के लिए एक किला बनवा रहा हूँ, वास्तु-शास्त्र के अनुसार, यह काम पूरा होते ही मैं और विघनेश्वर पुजारी दोनों कहीं जाकर तपस्यां करेंगे''।

''अच्छा सोचा है किन्तु गण्डक मृग जातिवालों के साथ रहते हुए और आराम से अपनी ज़िन्दगी गुज़रते हुए पुजारी तुम्हारे साथ मिलकर तपस्या करेंगे? मुझे यह संभव नहीं लगता !'', जीवदत्त ने अपना संदेह व्यक्त किया।
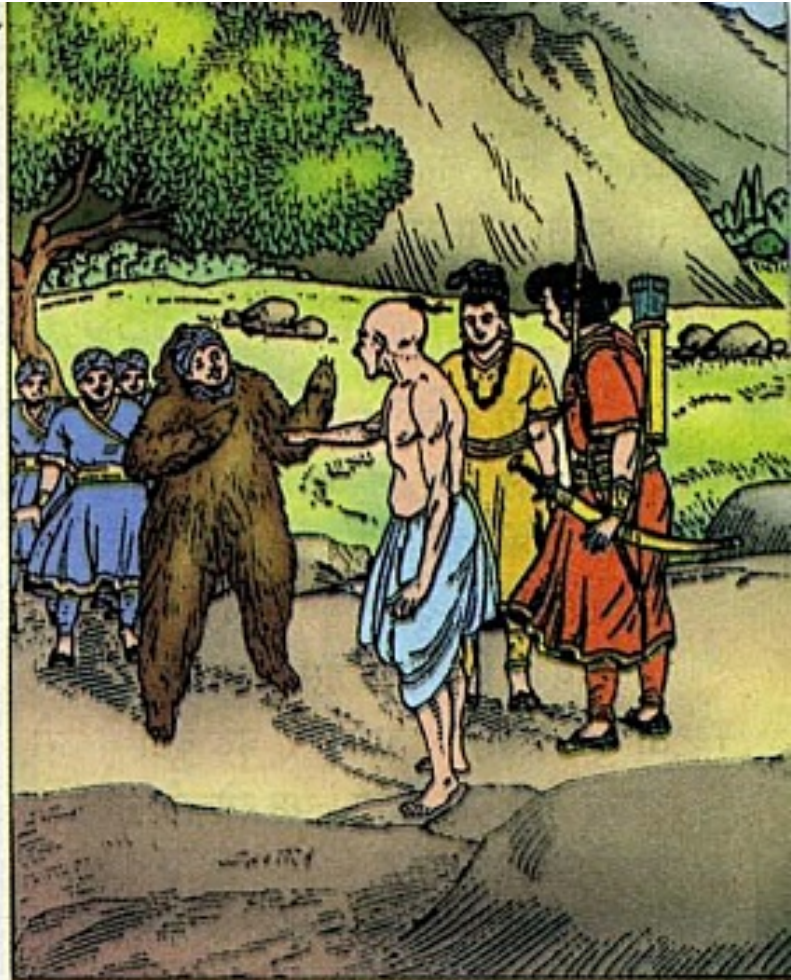
''सब भगवान की इच्छा पर निर्भर है। चलिये, मेरे निवास-स्थल पर चलते हैं। वहीं भोजन करके विश्राम कीजियेगा,'' स्वर्णाचारी ने प्रार्थना की।

पहाड़ पर चढ़कर स्वर्णाचारी के निवास-स्थल पर वे पहुँच ही रहे थे, उन्होंने देखा कि रीछ का चर्म पहने एक आदमी के चारों ओर घिरकर लुटेरे शोर मचा रहे थे और उसे सता रहे थे। वे आपस में बीच-बीच में कानाफूसी भी कर रहे थे। स्वर्णाचारी ने उनसे पूछा कि बात क्या है और वह कौन है, जिसने रीछ का चर्म पहन रखा।

रीछ का चर्म पहने उस आदमी ने झुककर स्वर्णाचारी को नमस्कार किया और कहा, ''स्वर्णाचारीजी, मैंने जान-बूझकर यह चर्म पहना नहीं है। मैं आज सबेरे सरदार के साथ

शिकार करने जंगल गया था। अचानक हम पर हमला हुआ और कुछ जंगली लोग सरदार को पकड़कर ले गये। मैं किसी तरह बचकर निकल आया।''

''जंगली लुटेरों के सरदार समरसिंह को पकड़कर ले गये? उनका इतना साहस ! वे जंगली कहाँ रहते हैं? वह प्रदेश कहाँ है?'' खड्गवर्मा ने मुस्कुराते हुए पूछा।

जीवदत्त ने कहा, ''हँसो मत जीव ! सरदार तो दुष्ट है ही, पर उससे भी बड़े दुष्टों ने उसे अपना बंदी बना लिया। यह सोचने की बात है, हँसने की नहीं।''

लुटेरों के सरदार के बंदी हो जाने की ख़बर ने स्वर्णाचारी को आश्चर्य में डुबो दिया। उसका शरीर काँप उठा।

पहले इसी सरदार के हाथों वह क़ैद कर लिया गया, पर धीरे-धीरे उसने और उसके गिरोह के सभी आदमियों ने उसका आदर-सम्मान किया। सरदार समरबाहु, और स्वर्णाचारी के बीच अच्छी मैत्री स्थापित हो गयी।

''खड्ग जीवदत्त प्रभुओं, हम बड़ी विपत्ति में फंस गये हैं। आप दोनों महान शक्तिशाली हैं। उन जंगली आदमियों से आप लोग ही सरदार की रक्षा कर सकते हैं।'' स्वर्णाचारी ने दीनता-भरे स्वर में विनती की।

जीव और खड्ग ने एक-दूसरे को देखा। फिर खड्ग ने अपना सिर 'न' के भाव में हिलाते हुए कहा, ''जीव, सहायता कैसे की जाए, इसका कोई उपाय तुम ही सोचो ! हमारे मित्र स्वर्णाचारी की प्रार्थना को क्या हम स्वीकार करें? सब कुछ तुम्हारे निर्णय पर आधारित है।''

जीवदत्त ने क्षण भर सोचकर रीछ के चर्मवाले उस लुटेरे से पूछा, ''तुम्हारे सरदार को वे जंगली कैसे पकड़ सके? आख़िर वहाँ क्या हुआ? सविस्तार बताओ !''

अपना गला साफ़ करते हुए वह लुटेरा कहने लगा, ''जंगल में जो भी हुआ, मैं संक्षेप में आपको बता दूँगा। आप तुरंत हमारे सरदार की रक्षा नहीं करेंगे तो वे जंगली नरभक्षक हमारे सरदार को खा जाएँगे।''

(क्रमशः)

बाल-विशेषांक

नवम्बर २००१ के अंक में

भाग लेने के लिए बच्चों को आमंत्रित किया जाता है।

नन्हें लेखकों के लिए — मौलिक कहानियाँ ३०० से ५०० शब्दों के बीच, एक आकर्षक शीर्षक के साथ, और पजल्स, पहेली, चुटकले हमें भेजिए। प्रविष्टियाँ इन भाषाओं में होनी चाहिए — अंग्रेज़ी, हिन्दी, बंगाली, उड़िया, मराठी, गुजराती, तेलुगु, कन्नड़, तमिल अथवा मलयालम। आप तीन प्रविष्टियाँ भेज सकते हैं। अगर आपकी कहानी के लिए आपका कोई मित्र चित्र बना सकते हैं तो उन्हें भी भेजो। यदि वे चित्र अच्छे हैं तो आपके मित्र को (यात्रा खर्च देकर) चेन्नई बुलाया जायेगा और पत्रिका के लिए चित्र बनवाया जायेगा।

नन्हें कलाकारों के लिए — तीन चित्र या पेंटिंग जो भारतीय इतिहास और पुराण में किसी प्रसिद्ध घटना पर आधारित हों, भेज सकते हैं। (जिसे लिखकर बताना आवश्यक है) जिनकी प्रविष्टियाँ हमारी आशा के अनुकूल होंगी, उन्हें किसी कहानी का चित्र बनाने के लिए चेन्नई बुलाया जायेगा।

अंतिम तिथि : ७ जून, २००१

पुरस्कार : प्रशंसनीय कार्य के लिए आकर्षक पुरस्कार दिया जायेगा।

फोटो : कृपया अपनी प्रविष्ट के साथ अपनी पासपोर्ट आकार की तस्वीर अवश्य भेजें।

नाम : .... आयु/जन्म तिथि : ....

कक्षा : .... विद्यालय : ....

घर का पता : ....

....

.... पिनकोड ....

प्रविष्टि की जानकारी

१. ....

२. ....

३. ....

मैं प्रमाणित करता हूँ/करती हूँ कि ये चित्र या/कहानी आदि मेरे पुत्र/पुत्री की मौलिक रचना है। मैं चन्दामामा के द्वारा चयनित प्रविष्टियों -पर उसके पूर्ण कापीराइट अधिकार से सहमत हूँ, जिसे वे पत्रिका, तकनीकी मीडिया और अन्य भाषाओं में भी प्रयोग करेंगे।

प्रतिभागी का हस्ताक्षर . अभिभावक का हस्ताक्षर

भारत की गाथा

एक महान सभ्यता की झांकियाँ युग-युग में सत्य के लिए इसकी गौरवमयी खोज

१६. अहंकार पर विजय पानेवाले राजा

"हरिश्चंद्र की कहानी सचमुच ही बड़ी ही अद्भुत है दादाजी ! उसे सुनने के बाद यहाँ से जाने का ही मन नहीं करता।", संदीप ने कहा।

"तब तुम लोग यहीं बैठ जाओ ! मैं चला", कहते हुए देवनाथ उठ खड़े हो गये। बच्चे भी हँसते हुए उठ खड़े हुए।

"नदी तट पर थोड़ी देर टहलें?" देवनाथ ने पूछा।

"अवश्य" कहते हुए बच्चे भी देवनाथ के पीछे-पीछे जाने लगे। थोड़ी दूर जाने के बाद सिमेंट की एक बेंच पर बैठते हुए देवनाथ ने कहा, "थोड़ी देर यहाँ बैठूँगा तुम लोग चाहो तो घूमो-फिरो !"

"जब आप खड़े हो गये तो हम भी खड़े हो गये। आप चले तो आपके पीछे-पीछे हम भी चले। अब आप यहाँ बैठ गये। हम भी यहीं बैठेंगे। आपके अनुचर जो ठहरे", संदीप ने कहा। सब बच्चे हँसते हुए बेंच पर बैठ गये।

"उदित होता हुआ पूर्णचंद्र, कलरव करती हुई बहती नदी, शीतल यह हवा और एक कहानी सुनने के लिए हमें प्रेरित कर रहे हैं दादाजी। यह वातावरण कितना ही सुहावना और मनमोहक है।" श्यामला ने मुस्कुराते हुए धीमे स्वर में कहा। "अपने पुरातन इतिहास के बारे में जानने की हमारी तीव्र इच्छा है। हमारे अध्यापकगण, हमारे देश पर हुए दुश्क्रमणों, हमलों और उनके परिणामों पर ही प्रकाश डालते रहते हैं। जो कहानियाँ आप बताते रहते हैं, भला वे क्यों नहीं बताते?", संदीप के दोस्त राम ने अपना संदेह व्यक्त किया।

विश्वावसु

"यह आपके अध्यापकों की गलती है। ब्रिटिशों ने जिस इतिहास को पाठ्यक्रम में स्थान दिया, उसी में थोड़े-बहुत परिवर्तन करके हमें इतिहास सिखाया जा रहा है। उन्होंने हमारे इतिहास को ऐसा रंग दिया मानों उनका शासनकाल ही भारत का स्वर्णयुग था। उन्होंने यह कुछ अपना सिक्का जमाने के लिए किया और यह स्वाभाविक भी है। इसीलिए उन्होंने प्राचीन काल से संबंधित महान घटनाओं को भुला दिया और उत्तम व्यक्तियों के प्रति उदासीनता दिखायी। उन्होंने यह सब कुछ पुराण कहकर टाल दिया। परंतु उनका यह कथन सच नहीं है। हमारे पुराण बहुत दूर तक इतिहास की घटनाओं पर ही आधारित हैं। परंतु हमको यह विषय दूसरे कोण से भी देखना होगा। कोई पात्र भले ही कल्पित हो, पर अगर वह पीढ़ियों दर पीढ़ियों तक लोगों के हृदयों पर अमिट छाप डाले और उनकी विचार-पद्धति पर गहरा प्रभाव डाले तो उसे वास्तविक ही मानना चाहिए न? यह पात्र जीवित व्यक्तियों से भी महान व उदात्त होता है। है न? जो भी हो, युगों-युगों तक जिन व्यक्तियों और घटनाओं ने अपना अमिट प्रभाव लोगों के हृदयों पर डाला है, उन्हें जानना बहुत ही आवश्यक व अनिवार्य है, चाहे वह इतिहास ही क्यों न हो।", देवनाथ ने कहा।

"सत्तारूढ होते हुए भी हरिश्चंद्र ने विनयपूर्वक शासन-भार संभाला। धर्मबद्ध और कर्तव्यनिष्ठ होकर उन्होंने अपनी जिम्मेदारियाँ संभालीं। अगर ऐसे ही राजा और हों तो कृपया उनके बारे में बताइये।", श्यामला ने पूछा।

"अधिकार के तैश में आकर मनमानी करनेवाले राजा कितने ही थे परन्तु बहुत ही कम राजा होंगे, जिन्होंने दुरहंकार पर विजय पायी। उनमें से एक हैं, जनक महाराज।

उनका लक्ष्य प्रजा क्षेम था। उन्होंने अपने को

भगवान का परिचारक मात्र मानकर राज्य-भार संभाला। अपने कर्तव्यों को भली-भांति निभाया। ऐसे सुशील एवं सद्गुणी राजाओं में वे एक थे।", देवनाथ ने कहा।

"अहंकार के बिना जीना क्या इतना मुश्किल है, दादाजी !", श्यामला की सहेली सुस्मिता ने पूछा।

"हाँ बिटिया, बहुत ही मुश्किल है। पराये राजाओं पर विजय पाने से भी मुश्किल है। अहंकार पर विजय पानेवाले सत्यव्रती राजा कितने ही हैं। उनके बारे में हम दीर्घकाल से कहते और सुनते आ रहे हैं। उदाहरण के लिए जनश्रुति महाराज को लो। वे आदर्श राजा थे। जनता का क्षेम समाचार सुनने के बाद ही वे सोने जाते थे।", फिर देवनाथ ने उनकी कहानी यों सुनायी।

"यह हजारों सालों के पहले की बात है। आज ही की तरह वह दिन भी पूर्णचंद्रमा का दिन था। राजा भोजन कर चुकने के बाद प्रासाद के ऊपर इधर-उधर टहल रहे थे। तब कुछ हँस आकाश में उड़ते हुए आपस में बातें करते हुए जा रहे थे। जनश्रुति महाराज हँसों

एक और महान पुरुष भी है, जो उनसे भी बढ़कर उत्तम है। फिर वे सानंद नींद की गोद में चले गये।

इसके कुछ दिनों बाद उन्होंने रैत्व महाराज के बारे में और विवरण जाने। वे उनसे स्वयं जाकर मिले। रैत्व युवक थे, इसलिए उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह उनसे करवाया। फिर अपना राज्य भी उन्हें सौंप दिया और वानप्रस्थ स्वीकार करके जंगल चले गये।''

''इसका यह मतलब हुआ कि राजा, नीति-नियमों और सत्य को अधिकाधिक मानते थे और उनकी दृष्टि में वे ही मूल्यवान थे।'', राम ने कहा।

''हाँ, यही नहीं, कुछ राजा ऐसे भी थे, जो बड़ों के आग्रह के शिकार होते थे, पर सच बोलने से हिचकिचाते नहीं थे। इसके लिए हरितस्व ही स्वयं एक उदाहरण हैं'', देवनाथ ने कहा।

''तब तो दादाजी, उनके बारे में अवश्य बताइये'', श्यामला ने जिद की। देवनाथ ने हरितस्व के बारे में यों कहा। ''हरितस्व समर्थ व कुशल शासक ही नहीं थे, बल्कि अद्भुत गायक भी थे, शायद उनकी बराबरी का गायक उस ज़माने में नहीं था। वे एक दिन अपने उद्यानवन में गा रहे थे तब नारद मुनि वहाँ आये। उस गान-माधुर्य में वे खो गये। उन्होंने यह बात ब्रह्मा और सरस्वती को बतायी। वे भी हरितस्व का गायन सुनने लालयित हुए। नारद ने इसके लिए आवश्यक प्रबंध किया। राजा ब्रह्मलोक गये ब्रह्मा ने उनसे कहा, ''महाविष्णु लोक रक्षक हैं। वे सदा इन्हीं प्रयत्नों में मग्न रहते हैं। इस कारण वे सो भी नहीं पा रहे हैं। अपने गायन से क्या उन्हें शांतिपूर्वक सुला सकते हो?''

''भगवन, प्रयत्न करूँगा'', राजा ने सविनय कहा।

राजा का मधुर गायन सुनते हुए महाविष्णु तन्मय होकर निद्रा की गोद में चले गये। उनकी सफलता पर

की भाषा जानते थे। इसलिए वे उनकी बातों को सावधानी से सुनने लगे।

''इस राजा के प्रासाद से विचित्र प्रकाश दिखायी पड़ रहा है। यह कोई साधारण प्रकाश नहीं है। यह दिव्य प्रकाश है। भला यह क्या हो सकता है?'' एक हंस ने अन्य हंसों से पूछा।

''हाँ, निस्संदेह ही वह दिव्य प्रकाश है। इसके पूर्व मैंने ऐसा विचित्र प्रकाश कहीं देखा था। याद नहीं आ रहा है कि कहाँ देखा। हाँ, अब याद आ गया। रैत्व महाराज के प्रासाद से गुजरते हुए मैंने ऐसा ही दिव्य प्रकाश देखा था। वह तो इससे भी बड़ा व दिव्य प्रकाश था।'', दूसरे हंस ने कहा।

इसके बाद हंस आँखों से ओझल हो गये। जानते हो, इन बातों को सुनने के बाद जनश्रुति महाराज ने क्या किया? यह जानकर उन्हें अपार हर्ष हुआ कि

मुग्ध ब्रह्मा ने कहा, "राजन ! तुम्हारी प्रतिमा अमोघ है, असमान है। कोई वर चाहते हो, माँगो !"

"संगीत के मूलपुरुष परमेश्वर हैं। उनका गायन सुनने की मेरी तीव्र इच्छा है। यही मेरी एकमात्र चाह है। मेरी मांग में कोई अपराध हो तो क्षमा कीजिए", राजा हरितस्व ने कहा।

"ब्रह्मा ने उनकी मांग स्वीकार कर ली। शिव ने भी अपनी स्वीकृति दी। परमशिव का गायन सुनने सभी देवता जमा हुए। शिव ने शंकराभरण राग का आलाप किया। देवता प्रसन्नता से फूल उठे। शंकर के आलाप की समाप्ति के बाद हरितस्व बिना हिले-डुले बैठे रह गये।

ब्रह्मा ने उन्हें बुलाया तो वे चौंक पड़े और कहा", सोचा कि गायन अब भी हो रहा है। इतनी जल्दी समाप्त हो गया?" उनकी वाणी में आश्चर्य भरा था।

"यह कैसे समझ बैठे कि गायन अब भी पूरा नहीं हुआ?", ब्रह्मा ने पूछा।

"शंकराभरण का आलाप करते समय गायक को चाहिए कि वह परिपूर्ण प्रशांत चित्त होकर गाये, परंतु.....", कहते हुए वे रुक गये।

उनकी इन बातों से सभी आश्चर्य में डूब गये। राजा का संकेत यही है न कि शिव ने प्रशांत चित्त होकर नहीं गया।

शिव ने अपनी तीसरी आँख खोली। सबने सोचा कि शिव अपने अपमान से क्रोधित हो उठे और किसी भी क्षण राजा हरितस्व को भस्म कर देंगे। परंतु ऐसा नहीं हुआ। परमशिव राजा के सत्य बचन व साहस पर मुग्ध हुए। उनपर करुणा दिखायी। मंदहास करते हुए शिव को राजा ने साष्टांग नमस्कार किया।

"ब्रह्मा की आज्ञा के अनुसार मैं इस राग को आलाप रहा था और वह भी केवल एक मानव मात्र के लिए। मुझमें क्षण भर तक यह संदेह बना रहा कि क्या मेरे गायन का आस्वादन करने की शक्ति इस मानव में है? मेरी इस चंचलता के कारण ही गायन में जो परिपूर्ण प्रशांति चाहिए, वह नहीं रही। उसका लोप हुआ। वास्तव में ही मुझसे यह भूल हुई। और महान गायक इस राजा ने इस सूक्ष्म रहस्य को जान लिया।"

परमेश्वर की तीसरी आँख से निकली अग्नि के कारण महाराज हरितस्व पुनीत हुए और अत्यंत शक्ति संपन्न बने। उत्तरोत्तर महेंद्र को बंदी बनानेवाले अंधिकासुर जैसे भयंकर राक्षस का भी उन्होंने बध किया। **(क्रमशः)**

इस माह जिनकी जयंती है

कौन ऐसा है जो फिल्म देखना पसंद न करता हो? जिस प्रकार हम फिल्में देखकर अपनी प्यास बुझाते हैं, उसी प्रकार सत्यजित राय ने फिल्में बनाने में अपने सम्पूर्ण स्नेह को बिखेरा है। सत्यजित राय को विश्व में विलक्षण फिल्मकार के रूप में पहचान मिली।

भारत को विश्व सिनेमा के नक्शे पर स्थापित करने का श्रेय उन्हीं को जाता है। बहुत सारे पुरस्कारों से सम्मानित सत्यजित राय के जीवन का महत्वपूर्ण दिन तब हुआ जब १९९२ में उन्हें आजीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए ऑस्कार पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सत्यजित राय का जन्म २ मई १९२१ में कलकत्ता में हुआ। कला और सिनेमा ने राय को बचपन में ही प्रेरित किया। बल्कि यह कहना ठीक होगा कि सिनेमा तथा कला उनके परिवार में ही रच-बस गया था। उनके दादा उपेन्द्र किशोर एक लेखक और प्रकाशक थे। उनके पिता सुकुमार राय बंगला के जाने माने लेखक और कवि थे।

सत्यजीत राय को इतनी विलक्षणता प्रदान करना, भगवान का उनके प्रति अगाध प्रेम और करुणा का उदाहरण है। एक फिल्म निर्देशक, कलाकार, संगीतकार, लेखक, संवादकार और वेषभूषा निर्देशक, फोटोग्राफर, सम्पादक, कवि तथा बुद्धिजीवी, इस एक व्यक्ति ने, जो न जाने कितनी विधाएँ अपने भीतर समेटे हुए था, उसे अपने कार्यों के माध्यम से प्रस्तुत किया। अर्थशास्त्र में स्नातक करने के बाद उन्होंने १९४१ में शांतिनिकेतन में रहकर फाईन ऑर्ट तथा चित्रकारी का अध्ययन किया।

सन् १९४३ में उन्होंने एक विज्ञापन कम्पनी में नौकरी करके अपने जीवन की शुरुआत की। परन्तु फिल्में बनाने की उनकी अभिरुचि और बढ़ती गई। १९५० में उनकी कम्पनी ने उन्हें लंदन भेजा। उन्होंने पाँच महीने वहाँ बिताये और उस दौरान उन्होंने कम से कम १०० यूरोपियन फिल्में देखीं। जिसमें इटली की 'बाईसाईकल थीफ' नामक फिल्म ने उनको काफी प्रभावित किया और वहीं से वे गम्भीरता से 'फिल्म निर्माण' में जुट गए।

फिल्म-निर्माण व्यवसाय उन्होंने अपनी फिल्म 'पाथेर

सत्यजित राय

पंचाली' से आरम्भ किया। जो सफलता-शिखर की उच्च चोटी पर पहुँची। इसी फिल्म से सत्यजित राय को प्रसिद्धि मिली। १९५६ में कैम्ब्रिज फिल्म उत्सव में इस फिल्म ने काफी नाम कमाया। इसे सर्वश्रेष्ठ 'मानव जीवन वृत्त' का पुरस्कार मिला। इनकी अन्य प्रसिद्ध फिल्मों में अपराजितो (१९५६), अपुर संसार (१९५९), चारुलता (१९६४), शतरंज के खिलाड़ी (१९७७) और आगन्तुक (१९९१) थीं। 'जयबाबा फेलूनाथने' को सर्वश्रेष्ठ बाल-फिल्म के लिए पुरस्कार मिला। उन्होंने चार बाल फिल्मों को मिलाकर कुल ३० फिल्मों का निर्माण किया।

उनके मित्र और सहयोगी उन्हें प्यार से मानिकदा कहते थे। राय एक सक्षम मनोवैज्ञानिक के रूप में भी जानते हैं। उन्होंने दो संगीतमय गूपी *गेने बाघा बेने* और *हीरक राजर देशे* भी बच्चों के लिए बनाई। वे एक कार्टूनिस्ट और लेखक भी थे। १९६१ में उन्होंने उस 'संदेश' नामक पत्रिका को पुनः आरम्भ किया जो उनके दादाजी द्वारा प्रकाशित की जाती थी। इस पत्रिका के लिए राय ने कहानी और चित्र भी दिए।

१९९२ में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया। उसी वर्ष अप्रैल में इस विलक्षण प्रतिभावान व्यक्ति का देहान्त हो गया, परन्तु फिल्म प्रेमियों में उनका नाम सदा जीवित रहेगा।

भारत भ्रमण

प्रिय मित्रों,

त्रिशा और तुहिन बड़े भाग्यशाली बच्चे हैं। वे इस वर्ष गर्मी की छुट्टियों में देश की मनोरंजक यात्रा पर जा रहे हैं। और वे आपको भी अपनी इस खोजी यात्रा में शामिल होने का निमंत्रण देते हैं।

चन्दामामा का यह अंक आपको महान भारत की यात्रा पर ले जाएगा। आप कुछ जाने माने और कुछ अप्रसिद्ध स्थानों पर भी जाएँगे और इनकी परम्परा और संस्कृति के बारे में पढ़ेंगे, जो आपको नया और आश्चर्यजनक भी लगेगा। आप इसमें कुछ हस्तकलाएँ भी सीखेंगे, आपको एक मेहमान कुछ अन्य चीजें बनाना सिखायेगा। आशा है कि आपको हमारा यह विशेष लेख रुचिपूर्ण लगेगा।

पढ़ने के बाद हमें अवश्य लिखिए कि आपको कैसा लगा।

शुभकामनाएँ,

Viswam.

विश्वम.

'एई !'... त्रिशा चिल्लाई। 'वाह ! वाह !! अब तो सैर-सपाटे !, हम यहाँ आ गए !'' यह उसके भाई तुहिन ने कहा। वे खुश होते हुए अपनी परीक्षाओं की रिपोर्ट को लेकर अपने पापा के पास गए। दोनों को अपनी कक्षा में प्रथम स्थान मिला था। ''बहुत अच्छे बच्चों! तुमने बहुत अच्छा किया। तुम लोगों ने अपना काम पूरा किया और अब मेरी बारी है।''

पापा ने वादा किया था कि यदि वे अपनी परीक्षाओं में अच्छा नम्बर ले आयेंगे तो वे उनको भारत के कुछ रुचिपूर्ण स्थानों का दौरा करायेंगे। और उन्होंने यह कर दिखाया। अगले कुछ दिनों तक उन्होंने योजना बनाई नक्शे पर स्थानों को ढूँढ़ा। अपने टिकट बुक किए।

वे लोग ट्रेन, हवाई जहाज, बस, कार और तो और बैल गाड़ी में भी जायेंगे। उन्होंने सोचा है कि वे कुछ दिन होटल में रहेंगे और कुछ दिन नीले खुले आकाश के नीचे।

यात्रा के नुस्खे

आहा ! क्या तुमने यात्रा के लिए सब कुछ जुटा लिया?

- फिर से देखो कि आपने सारे टिकट और नक्शे वगैरह रख लिए हैं !
- रुपये रखने से अच्छा है कि आप किराया देने के लिए चेक और क्रेडिट कार्ड रखें।
- दवाईयाँ और प्राथमिक चिकित्सा के सामान रखना न भूलें !
- धूपी चश्मा, कोल्ड क्रीम, कीड़े काटने से होनेवाली खुजली पर लगाने के लिए क्रीम, अपने छोटे पर्स में रखो।
- यदि तुम किसी ट्रैकिंग की योजना बना रहे हो तो, ये सामान अवश्य रखो-पीठ पर टाँगने वाला बैग, फर्स्ट एड बॉक्स, पानी का बड़ा बोतल, कुछ खाने का सामान, एक जोड़ी कपड़ा, टॉर्च, बैटरी और तम्बू। अपने दूरबीन, कैमरा और फिल्म रोल न भूलो !''

आपकी यात्रा मनोरंजक हो !
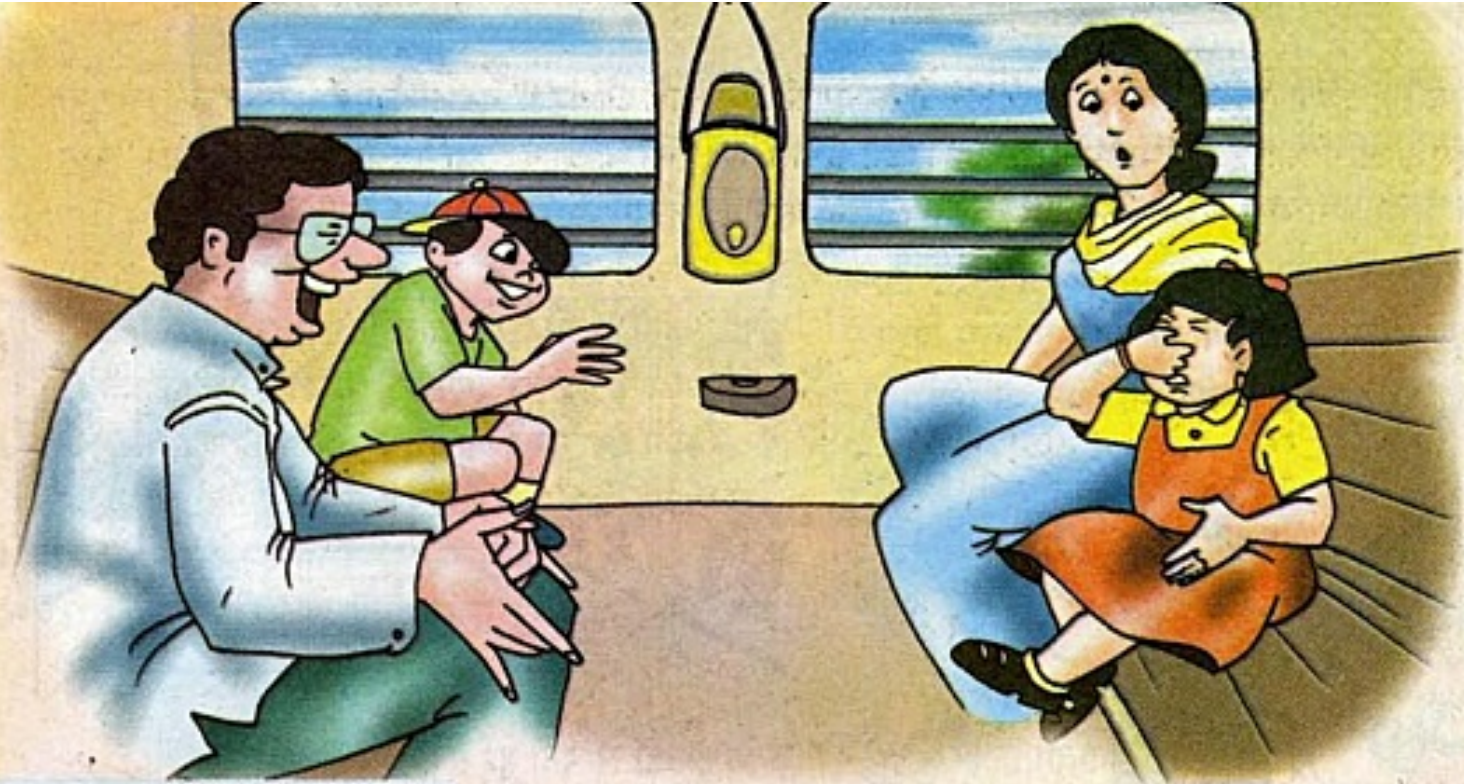
अनेक राजाओं ने अपने राज्य में रेल गाड़ियाँ चलाईं। शासक काफी सुविधायुक्त कोचों में बैठते थे। बरोडा के गायकवाड ने तो अपनी कोच में एक सिंहासन भी रखवाया था।

चलो ! अन्ततः दोनों बच्चे अपने मम्मी पापा के साथ मुम्बई के विक्टोरिया स्टेशन से ट्रेन में चढ़े। "रेलगाड़ियाँ क्या मनोरंजक होती हैं !" तुहिन खुश होते हुए बोला। "कितना पुराना और गंदा है यह डिब्बा !" त्रिशा ने अपनी नाक बंद करते हुए कहा। हाँ भारतीय रेल काफी पुरानी है।" पापा ने हँसते हुए कहा। 'ब्रिटिश लोगों ने हमारे देश में रेलगाड़ियों को आरम्भ किया।"

'पहली रेलगाड़ी जो भारत में चली वह मुम्बई और थाने के बीच चली। यह १६ अप्रैल १८५३ में मुम्बई से आरम्भ हुई। यह एक छुट्टी का दिन था, इसलिए ४०० यात्रियों को रेल यात्रा के लिए शुभकामनाएँ देने के लिए एक भारी भीड़ जमा हो गई थी। विदाई समारोह बिल्कुल राजकीय ढंग से गवर्नर के बैण्ड तथा २१ गोलियों के धमाके से किया गया।

'ओह...!' त्रिशा एक बड़े एल्शिसियन कुत्ते की ओर इशारा करते हुए चिल्लाई। 'ठीक है ! तुम्हारा पालतू जानवर भी तुम्हारे साथ जा सकता है।" मम्मी ने बताया। तुम अपना कुत्ता अपने साथ तभी ले जा सकते हो जब तुम प्रथम श्रेणी में यात्रा कर रहे हो। परन्तु इसके लिए तुम्हें दो बर्थों या चार बर्थों का कम्पार्टमेंट बुक करना पड़ेगा जो तुम्हारे अतिरिक्त सामानों के प्रयोग के लिए होगा।"
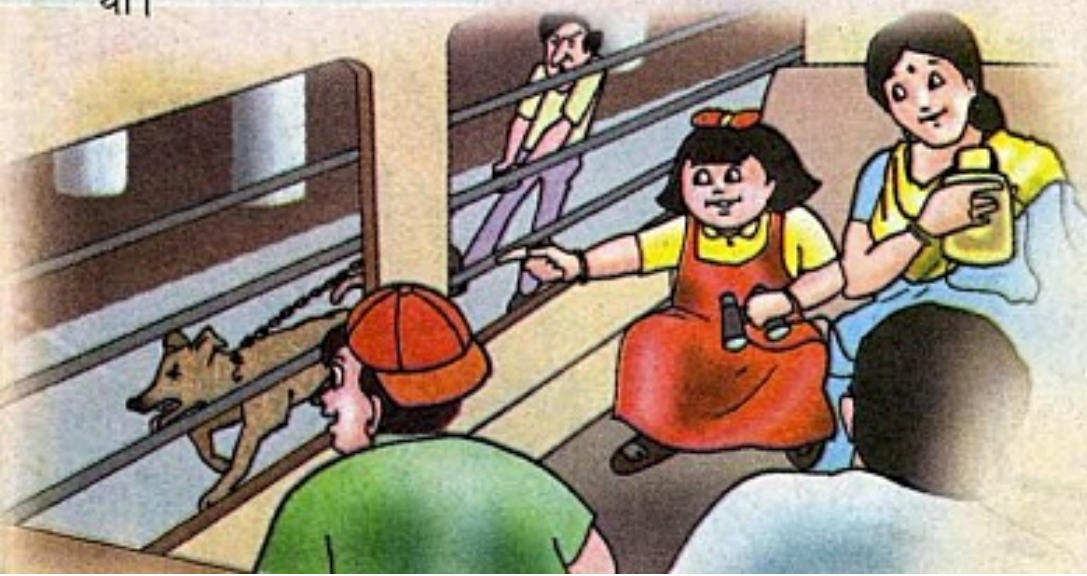
उनका सबसे पहला पड़ाव रंगीन और सुन्दर **गुजरात** था। **अहमदाबाद में बच्चे पतंग संग्रहालय में गए।** तुहिन जैसे पतंग के दिवाने को यह एक मनोरंजक बात थी। हजार से भी ज्यादा रंग-बिरंगी पतंगे एक ही मकान में! वह चकित होते हुए 'आहा!-ओह !' किए जा रहा था। पतंग संग्रहालय विश्व में दो ही हैं। दूसरा टोकियो में है। वहाँ पर एक पतंग है जो ४५० कागज के टुकड़ों से बनी हुई है।

राजस्थान का अनुभव भी अच्छा था। बच्चे परिवार सहित **जंतर-मंतर** उतरे, जो **जयपुर** शहर के संस्थापक संवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा बनवाया गया। जयसिंह एक बुद्धिमान पढ़े-लिखे शासक होने के साथ एक खगोल शास्त्री भी थे। उन्होंने वहाँ का समय जानने तथा सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण का पता लगाने के लिए समय मापक यंत्र आदि का प्रयोग किया।
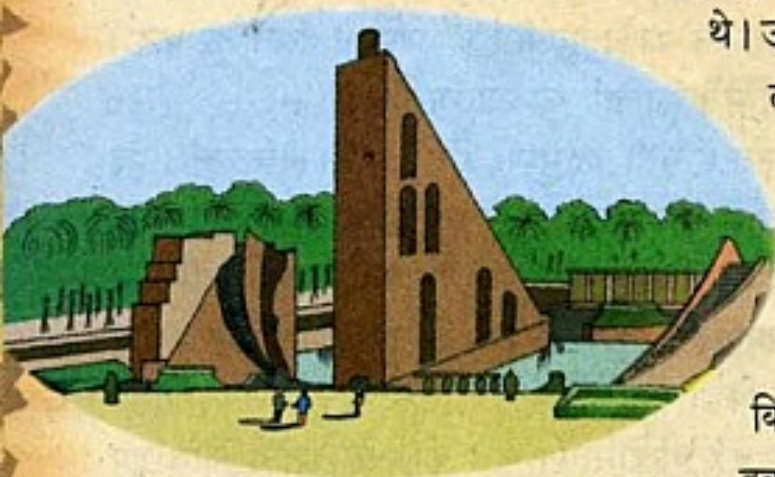
''कुछ पकड़ लो नहीं तो तुम लोग उड़ जाओगे !'' मम्मी ने मजाक किया और बच्चे जाकर **हवामहल** की दिवार से सट गये, क्योंकि उन्हें नहीं मालूम था कि माँ उन्हें उल्लू बना रही हैं। वे हँसने लगी और दोनों बच्चे रूठ गए। कितनी अच्छी हवा आ रही है यहाँ!

हवा महल में पाँच तल हैं जिसमें ९५३ खिड़कियाँ और बाल्कोनी हैं! यह महल इस तरीके से बनाया गया है कि इसमें हमेशा ठंडी हवा आती रहती है।

"तुम लोग एक पवित्र स्थान में प्रवेश कर रहे हो," मम्मी ने अपनी साड़ी का पल्लू सिर पर खींचते हुए कहा। "वहाँ हँसना, और जोर से बात भी नहीं करना।" लेकिन वहाँ पर उनकी हिदायतों की कोई आवश्यकता नहीं थी। जैसे ही बच्चे **अमृतसर** के **स्वर्ण मंदिर** में गए, वे स्वयं वहाँ के वातावरण को देखकर शांत हो गए।

"स्वर्ण मंदिर धर्मनिर्पेक्षता का एक सच्चा उदाहरण है।" पापा ने बताया। यह जमीन सम्राट अकबर द्वारा दान में दी गई थी। गुरु रामदास ने यहाँ पर १५७७ में खुदाई का कार्य आरम्भ किया। १५८९ में इस मंदिर की नींव एक मुसलमान मीर के हाथों रखी गई।

बच्चों ने हरमंदिर साहेब में प्रवेश किया, जहाँ उसके भीतरी हिस्से में सिखों का पवित्र ग्रंथ *'गुरु ग्रन्थ साहिब'* एक सुन्दर छत्र के नीचे रखा गया था। भक्तों का एक समूह पूरी तल्लीनता से *गुरुबाणी* गा रहा था।

जब पापा ने निर्णय लिया कि वे *कार सेवा* करेंगे तो बच्चों ने पूरे उत्साह के साथ उनका साथ दिया। उन्होंने गुरुद्वारे में झाड़ू लगाया फर्श पर पोचा लगाया। उनके साथ अन्य लोग भी यह काम कर रहे थे। पापा ने वहाँ आने वाले लोगों के जूते लाइन में रखे, मम्मी रसोई घर में प्रवेश कर गईं।

कार सेवा के बाद पूरा परिवार पंक्तियों में बैठकर *लंगर* खाने लगा, जो गुरुद्वारे में रोज खाना खिलाया जाता है। उन्होंने सादे परन्तु स्वादिष्ट *रोटी-सब्जी* और *दाल* का आनन्द लिया।

यही है वह जिसके लिए बच्चे इन्तजार कर रहे थे। अब उनकी यात्रा, अनेक जंगली जीव उद्यानों की ओर थी। जो उत्तरी-पूर्वी भारत में काफी हैं। ''चिड़िया घर नहीं'' त्रिशा ने जोर दिया। ''हम जंगल में जाकर जानवरों को देखना चाहते हैं।'' क्या तुम वह रास्ता ढूँढ सकते हो जिससे होकर वे पाँच जंगली जीव उद्यानों में गए?

आप **महान हिमालय राष्ट्रीय उद्यान** जो कुल्लू घाटी के पास है, अप्रैल और जून के बीच जा सकते हैं। बर्फीला तेंदुआ, पहाड़ी बकरी, याक, सारस, भूरे और काले भालू यहाँ के आकर्षण हैं।

शिवालिक पट्टी में **कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान** का नाम प्रसिद्ध ब्रिटिश शिकारी जिम कॉर्बेट के नाम पर पड़ा। इस उद्यान में जाने का सही समय फरवरी और मई है। वहाँ पर आपको चीते, हाथी, नील गाय, साम्भर, चीतल, साही, तेंदुआ, चार सींघों वाला हिरन और जंगली सूअर देखने को मिलेंगे।

दुडुवा राष्ट्रीय उद्यान, जो हिमालय की निचली पहाड़ियों में हैं, वह मुख्य रूप से दरियायी हिरणों के संरक्षण के लिए है। बाद में चीते और तेंदुए यहाँ लाए गए। अभी हाल ही में दरियाई घोड़े भी लाये गए हैं। इस उद्यान में पक्षी भी हैं।

बान्धव गढ राष्ट्रीय उद्यान में आपको चीतल, तेंदुए, नील गाय, साम्भर, चीते, और पक्षी भी देखने को मिलेंगे। यहाँ जाने का सबसे अच्छा समय फरवरी से जून माह के बीच का समय है।

१९७३ में चीतों के लिए **पालामाऊ** भी **राष्ट्रीय उद्यानों** में शामिल किया गया। आप वहाँ के जानवरों को हाथी बाजवा और मधुचन जैसे शिखरों पर चढ़कर देख सकते हैं।

तुहिन बस से उतरा और अपनी कमर को सीधा किया। त्रिशा पहले से ही चारों ओर आश्चर्य भरी दृष्टि से देख रही थी।

वे कहाँ हैं ?
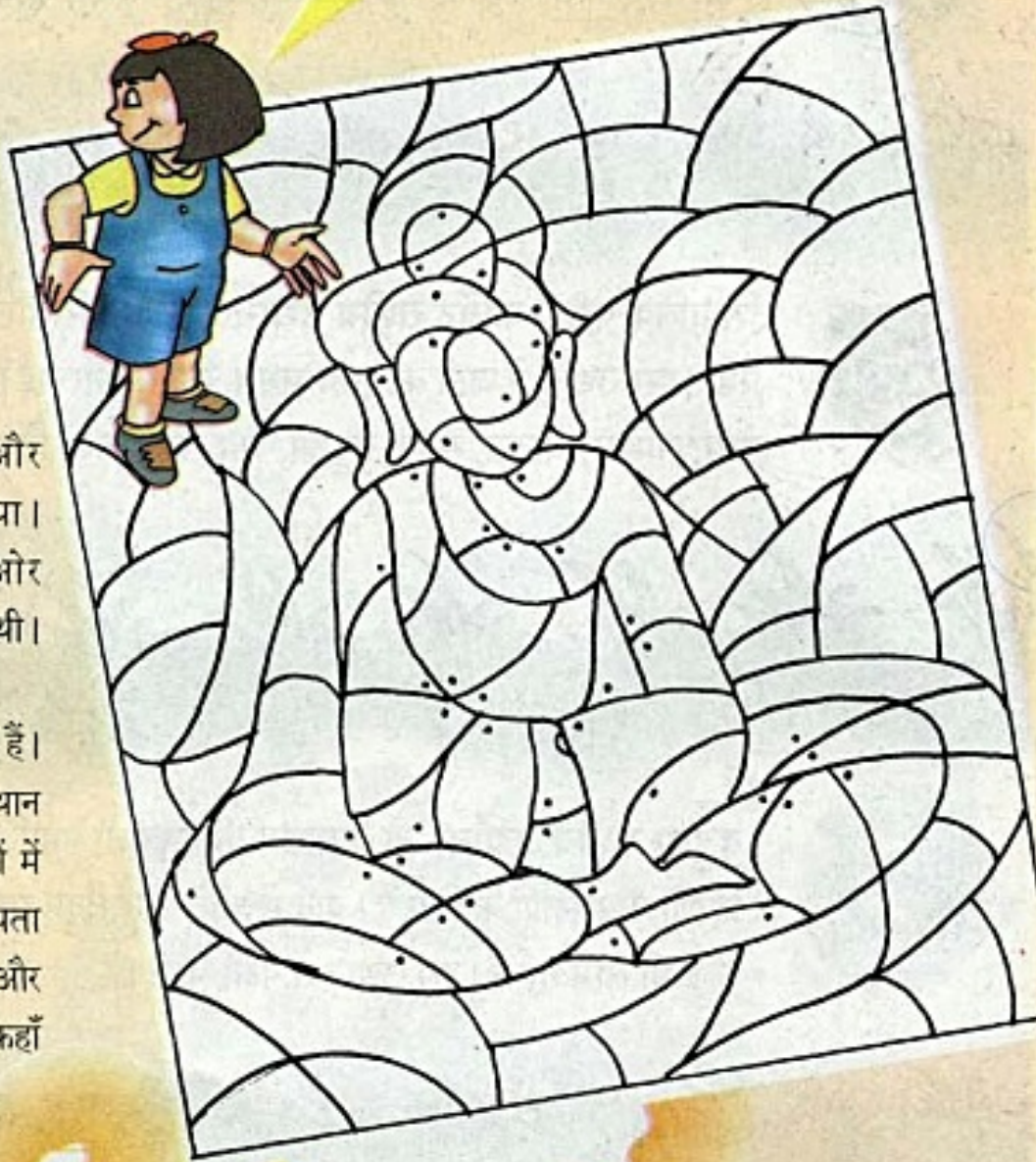
यहाँ कुछ संकेत दिए गए हैं। यह **बिहार** का बड़ा ही पवित्र स्थान है। यदि आप बिंदुवाली जगहों में रंग भरोगे तो आपको तुरंत पता चल जायेगा कि यह कौन है? और वह आपको बतायेगा कि वे कहाँ गए थे?

प्राचीनकाल से आज तक स्टील के लिए प्रसिद्ध शहर। इन शहरों के नाम यहाँ अक्रमिक रूप से लिखे है। उन्हें सीधा करके लिखो और जानो ! क्या आप स्वयं कर सकते हैं ?

१. कारोबो

२. दमशेरपुज

३. र्गापुदुर

४. ईलाभि

५. ऊरकेराला

उत्तर

रंग भरो :-

बुद्ध का चित्र, बोध गया। जहाँ गौतम बुद्ध को ज्ञानोदय हुआ।

स्टील के लिए प्रसिद्ध शहर :-

१. बोकारो
२. जमशेदपुर
३. दुर्गापुर
४. भिलाई
५. राऊरकेला

यह कोलकत्ता में उनका पहला ही दिन था, परन्तु वहाँ की उमस भरी गर्मी ने उन्हें परेशान कर दिया। त्रिशा और तुहिन थकान और प्यास के मारे हाँफने लगे। उनके पापा के मित्र चटर्जी अंकल ने कहा, ''चलो, मैं तुम्हें वहाँ ले जाता हूँ जहाँ तुम कुछ परंपरागत मिठाईयाँ खा सकते हो। उससे तुम थोड़ा तरोताजा भी हो जाओगे।'' इस तरह बच्चे अंकल के पीछे चल दिए और समय कैसे बीता पता नहीं। ''आपका मतलब रसोगुल्ला'' त्रिशा चैटर्जी अंकल के साथ मित्रता बढ़ाने की कोशिश करने लगी। हाँ, रसोगुल्ला, राजभोग और रसमलाई, और खीर, मोहन और चम चम और मिष्टी दोई और .....
'ओह' तुहिन की आँखे चमक उठीं। 'क्या बहुत सारी बंगाली मिठाईयाँ होती हैं?''
रसोगुल्ला सबसे पहले १८६८ में सुतान्ती के नॉबिन चन्द्रदास द्वारा बनाया गया। उन्होंने दूध को फाड़ दिया और दूध का जो ठोस पदार्थ बचा उसे अच्छे से निचोड़ लिया। फिर उसके छोटे-छोटे गोले बना लिए और उन गोलों को चीनी पानी के घोल में डालकर ढक दो। इस प्रकार एकदम स्पंज जैसा रसोगुल्ला तैयार हो जायेगा।
लेडीकेनी दूध, खोआ और सूजी का तला हुआ गोला होता है। जिसे चीनी के पके हुए घोल में डाल दिया जाता है। इसका नाम लेडी केनिंग के नाम पर रखा गया जो कि भारत के ब्रिटिश वायसराय की पत्नी थीं। लेडीकेनिंग का नाम भारतीय होकर लेडीकेनी हो गया।
मिष्टी दोई बनाना :-
एक लीटर दूध को आधा होने तक पकाओ।
एक बड़े चम्मच चीनी को कढ़ाई में डालकर भूरा घोल होने तक पकाओ।
उस घोल को थोड़ा गरम ही रहने पर दूध में डाल दो।
उसमें एक कप ताजी बनी दही डाल दो।
अच्छे से उबाल कर उसे छोटे-छोटे मिट्टी के बर्तनों में डाल दो।
और अब कुछ ही घंटों में आपकी स्वादिष्ट मिष्टी दोई तैयार हो जायेगी।
वाह! लाजवाब है!

सुन्दर पहाड़ी राज्यों का ठंडा मौसम, चाय के बागान मधुर संगीत, मनमोहक नृत्य ! उत्तरी पूर्वी भारत में ऐसे बहुत सारे स्थान हैं। बच्चे ऐसे ही स्थानों में एक खोजी-यात्रा पर गए थे। क्या आप यह नहीं जानना चाहेंगे कि वे लोग किस किस स्थान पर गए? जरा इन संकेतों द्वारा आप उन स्थानों को खोजिए !

१. संघाई हिरण यहाँ पर नाचते हुए देखे जा सकते हैं।

....

२. यहाँ संगीत के साथ बाँस की डंडियों से बचते हुए नाचना होगा,

....

३. कितना विशाल नदी द्वीप है ! यह विश्व में सबसे बड़ा है।

....

४. कितनी अच्छी खुशबू! एशिया का सबसे बड़ा चाय बागान।

....

५. यह वह स्थान है जहाँ चीन से आ रही ब्रह्मपुत्र नदी भारत-भूमि में प्रवेश करती है

....

६. एशिया में आपको कहीं भी इससे बड़ा बुद्ध मठ नहीं मिलेगा। यहीं पर छठवें दलाईलामा पैदा हुए।

....

७. यहाँ बारिश होती है, बारिश होती जाती है और बारिश ही बारिश, विश्व में सबसे अधिक वर्षा के लिए जाना-माना स्थान।

....

८. मेघालय के इस स्थान में चलनेवाली ठंडी हवा आपको अचम्भित कर देगी!

....

९. यहाँ पर एक सींघ वाले दरियायी घोड़े रहते हैं।

....

उत्तर

१. कैबुलामजाओ
२. ऐजवल (आईजोल)
३. माजुलीद्वीप
४. मोनालोरी
५. लोहित
६. तवांग
७. चेरापुंजी
८. शिलांग
९. काजीरंगा

क्या आप जानते थे कि तुहिन और त्रिशा दोनों भरतनाट्यम शास्त्रीय नृत्य भी सीखते हैं? इसलिए पापा उन्हें कुछ अन्य हिन्दुस्तानी शास्त्रीय नृत्य दिखाना चाहते थे। एक लोक नृत्य में मार्शल आर्ट देखने के बाद तुहिन ने कहा ''मैं यह भी सीखना चाहता हूँ।''

मणीपुर में उन्होंने मणीपुरी शास्त्रीय नृत्य में मेटीज की एक सुन्दर नृत्य-विधा भी देखी। नृत्यांगनाएँ छोटे *कृष्ण की बाल-लीला* प्रस्तुत कर रही थीं। चमकते दमकते उनके कपड़े जिसमें घाघरे में शीशे जड़े थे और पादर्शी घूँघट, ये इस नृत्य को और आकर्षित बनाते हैं।

भुवनेश्वर में उन्होंने ओड़िसी नृत्य का भव्य प्रदर्शन देखा। भूतत्व वेत्ताओं के अनुसार ओड़िसी भारतीय शास्त्रीय नृत्य में सबसे पुरानी विधा है। उड़ीसा में कई ऐसी गुफाएँ हैं जैसे तनी गुम्फा, जिसमें ओड़िसी नृत्य की भंगिमाओं की खुदाई मिलती है।

उसके बाद उन्होंने दो प्रकार के **छाऊ** नृत्य देखे। तुहिन को वे सबसे ज्यादा पसंद आए। **छाऊ** पूर्वी भारत का सबसे प्रसिद्ध लोक नृत्य है। छाऊ नृत्य कलाकार अपने शरीर को नटसंबंधी क्रियायें करने के लिए कुछ गिने-चुने व्यायाम करते हैं। जिससे कि वे कूद सकें समरसॉल्ट कर सकें। वे *रामायण* और *महाभारत* की कहानियों का प्रदर्शन करते हैं। पश्चिमी बंगाल के **पुरुलिया** जिले का छाऊ नृत्य काफी प्रसिद्ध है। यह छः या सात पुरुषों द्वारा किया जाता है जो कागज, कपड़े और मिट्टी के बने हुए मुखौटे पहनते हैं।

मयूरभंज छाऊ नृत्य बिहार का प्रसिद्ध नृत्य है जो चैत्र उत्सव के समय परम्परागत रूप में मनाया जाता है। यह नृत्य नाटिका के रूप में होता है जिसमें मार्शल आर्ट और साधारण नृत्य भंगिमाएं दोनों शामिल होती हैं।

जब वे **उड़ीसा** के एक छोटे से शहर **सम्भलपुर** में उतरे तो मम्मी एक प्रसिद्ध हैंडलूम की दुकान में चली गईं। वे कुछ देखकर ओह ! आहा ! तब तक करती रहीं जब तक कि पापा और तुहिन इससे परेशान होकर उन्हें वहीं छोड़कर जाने के लिए तैयार न हो गए। वैसे मम्मी बुरा भी नहीं मानती।

यह दो दिन का कार्यक्रम था, जिसमें वे लोग गोन्ड जाने वाले थे। सम्भलपुर से **छत्तीसगढ़** का रास्ता काफी नजदीक है। जीप से तो सिर्फ कुछ घंटे। वे छोटे से शहर **गोण्ड** पहुँचे और वहाँ साप्ताहिक हाट में चले गए, जहाँ काफी कुछ मिलता है। जैसे महुआ के फूल, शहद, कपड़े, माचिस, नमक, और मिर्च आदि। सैकड़ों आदिवासी और गाँववालों की भीड़ दिखाई देती है।

तुहिन और त्रिशा बाजार का चक्कर लगाकर आ गए। "ये अजनबी फूल क्या हैं?" त्रिशा ने पूछा। ये महुमा के फूल है।" पटनामक अंकल ने बताया जो उन्हें यहाँ लेकर आये थे।

महुआ गोण्ड के लोगों का जीवन है। वे लोग महुआ के फूलों से ताड़ी बनाते हैं और अपने देवताओं को चढ़ाते हैं। महुआ फूल के दाने से तेल निकाला जाता है और इसका फल खाया जाता है। गोण्ड लोग भारत में सबसे बड़ी संख्या के आदिवासी हैं। वे छत्तीसगढ़ क्षेत्र में रहते हैं जो अब एक पूर्ण राज्य के रूप में जाना जाता है। यह राज्य आन्ध्रप्रदेश और उड़ीसा राज्यों को जोड़ता है। हाट देखने के बाद और गोण्ड का खाना खाने के बाद वे सम्भलपुर को लौट चले।

कोई **आन्ध्रप्रदेश** जाये और **तिरुपति** न जाए यह कैसे हो सकता है? विश्व प्रसिद्ध भगवान वेंकटेश्वर का यह मंदिर तिरुमला नामक एक पहाड़ी पर है जो समुद्र तट से ८४० मीटर ऊँची है। "मम्मी यहाँ इतने सारे लोग गंजे क्यों दिखाई दे रहे हैं।" त्रिशा ने पूछा, जो इस शहर में काफी लोगों को गंजा देखकर आश्चर्य में पड़ गयी थी। "दक्षिण भारत के हिन्दुओं के लिए तिरुपति में सिर मुड़वाना परम्परा का एक भाग है। यह भगवान को चढ़नेवाला एक चढ़ावा है।" मम्मी ने बताया। "मैं भी अपना सर मुड़वाने जा रहा हूँ।" पापा ने घोषणा कर दी और दोनों बच्चे विरोध करने लगे। पापा उनके लिए बड़े-बड़े लड्डू लेकर आए। "तिरुपति लड्डू अपने स्वाद के लिए काफी प्रसिद्ध है।"

"आहा... इसके लिए तो कोई शब्द ही नहीं है।" तुहिन ने कहा और वे लोग वहाँ से निकले। वे **बृहदेश्वर मंदिर** के ६६ मीटर ऊँचे गोपुरम की ओर बढ़े जो **तमिलनाडु** के **तंजौर** शहर में है। यह पहला मंदिर था जो पूरे तरीके से ग्रेनाईट ब्लॉक्स से बना।

इतने में त्रिशा दिखाई नहीं पड़ी। मम्मी ने सबसे पहले देखा कि उनकी छोटी-सी लड़की कहीं दिखाई नहीं दे रही है। फिर पापा और तुहिन भी त्रिशा को ढूँढ़ने लगे। "कहीं वह मंदिर से भाग तो नहीं गई?" मम्मी ने परेशान होते हुए पूछा। वे उसे देखने के लिए बाहर गए। उनका अनुमान ठीक ही था, क्योंकि त्रिशा वहाँ एक औरत को जमीन पर कुछ बनाते हुए देख रही थी। "अम्मा इसे 'कोलम' कहते हैं, जो चावल के सूखे आटे से बनाया जाता है। पहले आप गिनकर बिंदु बनाईए और फिर उन्हें एक दूसरे से मिलाए। आपकी यह प्यारी-सी बच्ची मंदिर के पर्श से डिजाईन उतार रही थी तो मैंने सोचा कि क्यों न इसे कोलम बनाना सिखाए जाए।" यह रंगोली है जो इस औरत ने बनाया, क्यों न तुम भी बनाते?
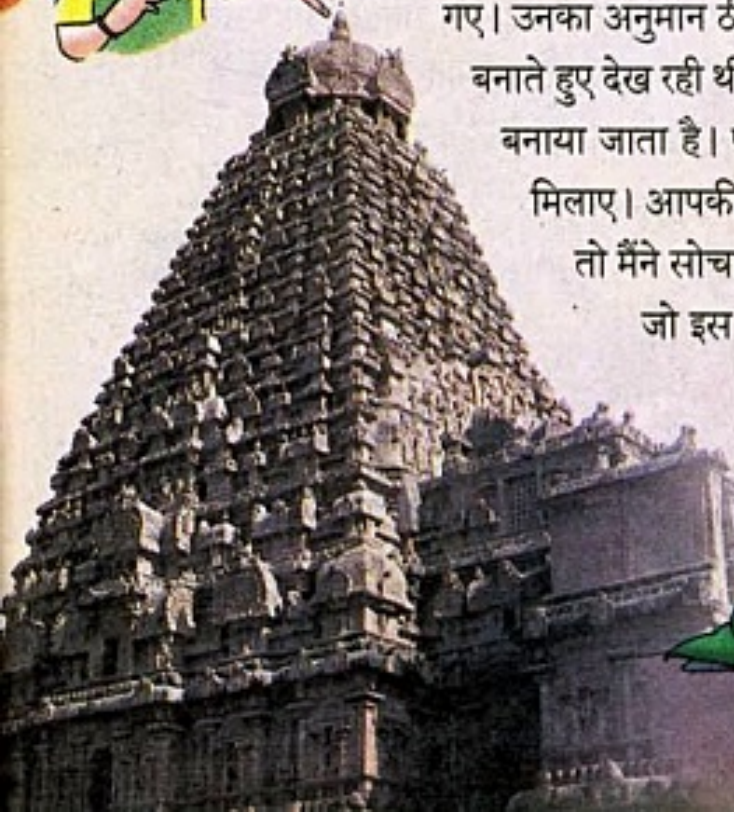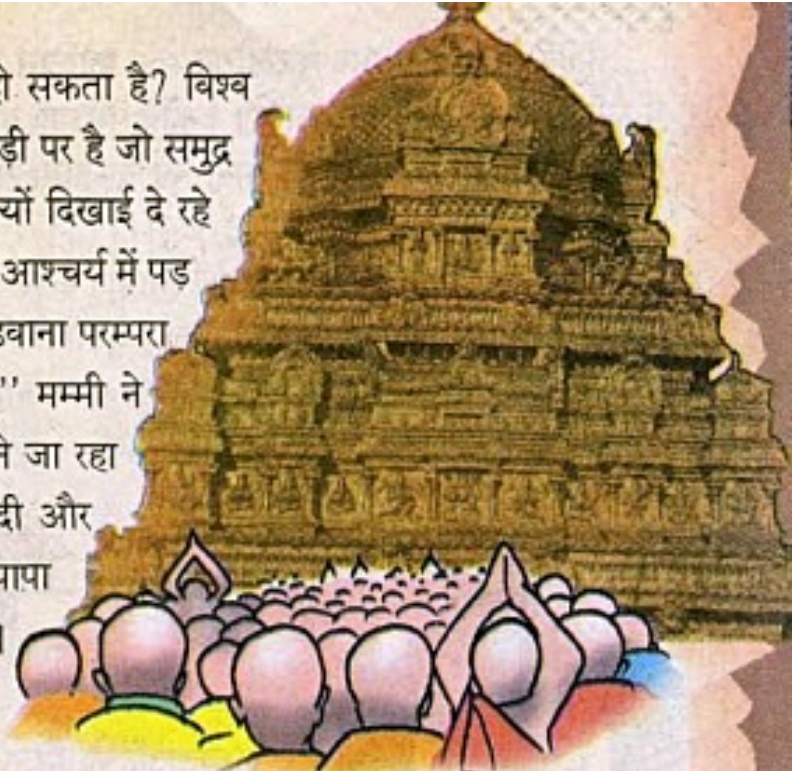
तुहिन और त्रिशा अब **केरल** राज्य के **कोचिन** शहर में पहुँचे। पापा उन्हें **सेंट फ्रैंसिस चर्च** ले गए जो भारत में सबसे पुराना यूरोपियन चर्च है। उन्होंने पर्यटकों को बताते हुए किसी गाईड से सुना कि यहाँ पर प्रसिद्ध पुर्तगाली खोजी और नाविक वास्को डि गामा को दफनाया गया है।

"वाह ! क्या बात है !" तुहिन बोला।

ईसाई धर्म यहाँ तीन शताब्दी पूर्व आया। इससे पूर्व यह यूरोप में जाना गया और रोम में धर्म के रूप में स्थापित हो गया। कहा जाता है कि सेंट थॉमस ईसा के बारह पैगम्बरों में से एक थे जो ५२ ए.डी. में केरल आए। उन्होंने समुद्र के किनारे अनेक चर्च बनाए। "केरल बहुत सारी सभ्यताओं का मिला-जुला समाज है। सभी धर्म के लोग यहाँ रहते हैं।" मम्मी ने कहा जो स्वयं मलयाली थीं। "क्रिश्चियन के अतिरिक्त यहाँ पर ज्यूज (यहूदी) भी रहते हैं, जो सोलोमन राजा की जहाज में आए। और कुछ लोग कहते हैं कि पैगम्बर ने स्वयं मिशनरी को ६१० ए.डी. में केरल भेजा। बताया जाता है कि १४वीं शताब्दी में यहाँ ५ मस्जिदें थी।

कर्नाटक जाते हुए। नाश्ते में गरम-गरम *इडली और बड़ा*, वह भी एक उडुपी होटल में जो **श्रवनाबेलांगोला** में था। इससे उन लोगों के यात्रा की कुछ थकान मिटी। त्रिशा ने सबसे पहले १७ मीटर ऊँची भगवान गोमाटेश्वर की प्रतिमा देखी।

श्रवनाबेलांगोला कर्नाटक में एक छोटा-सा शहर है। यह भारत में जैन धर्म का सबसे पुराना और पवित्र स्थान है। यह मूर्ति २६ कि.मी. दूर से भी देखी जा सकती है। यह विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा है। 'ओ' करके त्रिशा चिल्लाई, जो **बिजापुर** के **गोलगुम्बज** की व्हीस्परिंग गैलरी के एक छोर पर खड़ी थी। और दूसरी ओर खड़े तुहिन ने त्रिशा की आवाज साफ सुनी।

"वाह क्या बात है !" उसने कहा। "इसीलिए इसे व्हीस्परिंग गैलरी कहते हैं।" पापा ने कहा। गोलगुम्बज विश्व में सबसे बड़ा गुम्बज है और दूसरा रोम का सेंट पीटर का गुम्बज। ४२ मी. लम्बा-चौड़ा गोल गुम्बज बिना किसी खम्भे के सहारे के ही बनाया गया है।

और अब यह परिवार देश के सबसे रंग-बिरंगे और मनोरंजनपूर्ण स्थान पर पहुँच गया। चित्र को जरा ध्यान से देखो और बताओं कि वे कहाँ पर हैं? चित्र के एक भाग में तुम लोग स्वयं रंग भरोगे। चलो शुरु करो !
BAG
A&CO
ED
POLICE
VIVA O CARNAVAL
HOTEL MRU
उत्तर :-
त्रिशा और तुहिन गोआ में हैं।

एक महीना गुजर गया। वे घर के बिल्कुल पास आ गए। लेकिन यह यात्रा अभी पूरी नहीं हुई थी। पापा उनको कार में लेकर गए। "मैं तुम्हें कुछ और दिखाना चाहता हूँ, जो तुम्हारे घर के बिल्कुल पास है, जिसके बारे में तुम नहीं जानते और वह अचम्भित करनेवाला भी है?" और इसके बाद पापा ने कुछ नहीं कहा। थोड़ी देर में वे लोग **महाराष्ट्र** के **थाने** जिले के बाहरी हिस्से में पहुँच गए। जैसे ही कार एक स्थान पर पहुँची वहाँ के स्थानीय लोग इकट्ठे हो गए और मुँह फाड़कर बच्चों को देखते रह गए।

"ये लोग वर्ली आदिवासी हैं। ये लोग महाराष्ट्र और गुजरात में रहते हैं।" पापा ने बताया और उनमें से किसी से बात भी की। एक आदमी और एक औरत उन्हें एक झोपड़ी की ओर ले गये। वहाँ घर की दिवारों पर कुछ चित्र लगे थे। पापा उन चित्रों को देखने लगे। "इन्हें वर्ली चित्र कहते हैं और ये अब विश्व प्रसिद्ध हैं।" वे बोले।

त्रिशा और तुहिन बड़ी रुचि से उसे देखने लगे। वर्ली चित्रों में उनके देवता, जानवर और पेड़-पौधे तथा पक्षी एवं आदिवासी आदमी-औरत अपने रोजमर्रा के कार्यों पर जाते हुए देखने को मिलते हैं। इन चित्रों में शिकार पर जाना, खेतों में काम करना और नाचना आदि भी दिखाया जाता है।

वर्ली लोग अपने स्वयं के रंग और ब्रश बनाते हैं। इन चित्रों में जो एक रंग प्रयोग में लाया जाता है वह है सफेद। यह सफेद रंग वे चावल के आटे और पानी से तैयार करते हैं। वे पेन की जगह एक पतली तथा तीन इंच की डंडी लेते हैं। चित्रों में त्रिकोण आकार तथा हाथ-पैर के लिए लाइन बनी होती है।

कैसी लगी हमारी यह यात्रा?

क्या तुम कुछ नहीं करना चाहोगे...?

सास की बीमारी

रवीन्द्र जब पाँच वर्ष का था, तभी उसके पिता का देहान्त हो गया। तब से लेकर उसकी माता कल्याणी ने बड़े ही अनुशासन के साथ उसका पालन-पोषण किया। रवींद्र ने भी जी लगाकर पढ़ाई की और कचहरी में अच्छी नौकरी पायी। उसे अपनी लड़की देने और साथ ही काफी दहेज भी देने कितने ही लोग आने-जाने लगे।

एक दिन कल्याणी मंदिर में सुधा से मिली। उसने उससे कहा, "देखो कल्याणी...! मेरी बात मानो। दहेज के पीछे मत जाना। ग़रीब परिवार से आयी लड़की तुम्हारे नियंत्रण में रहेगी। तुम जो कहोगी, अक्षरश : उसका पालन करेगी। वह तुम्हें या तुम्हारे बेटे को दुःख पहुँचानेवाला कोई काम नहीं करेगी। दहेज की आशा में मैंने अपने बेटे की शादी ज़मींदार के घर की और इसका फल भुगत रही हूँ। मेरी बहू को मेरी कोई परवाह नहीं है। वह मुझे कीड़ा मानती है। जब देखो, मुझपर ताने कसती है और परेशान करती रहती है।" साड़ी के पल्लू से अपने आँसुओं को पोंछती हुई सुधा ने कहा।

सुधा की बातों का असर कल्याणी पर खूब पड़ा। वे उसके मन में घर कर गयीं। एक दिन शामको जब वह मंदिर गयी तब उसने देखा कि एक कन्या मधुर स्वर में कीर्तन गा रही है। उस लड़की के चेहरे पर रौनक थी। जब वह लड़की भगवान का प्रसाद लेकर चली गयी तब कल्याणी ने पुजारी से उसके बारे में पूछा।

पुजारी ने कहा, "तुम क्या इस लड़की को नहीं जानती ? साहुकार के यहाँ हिसाब लिखनेवाले गोविंद पंत की बेटी है। बेचारा ! उसकी आर्थिक स्थिति खराब है, इसलिए अपनी बेटी की शादी नहीं कर पा रहा है। रत्ना है इसका नाम ।"

कल्याणी को उसी पल लगा कि यह लड़की उसकी बहू बनने के लिए सर्वथा योग्य है। उसने स्वयं जिम्मेदारी हाथ में ली, जिसकी वजह से एक महीने के अंदर ही रवींद्र का विवाह रत्ना से संपन्न हुआ।

रम्या दीक्षित

जिस दिन रत्ना ससुराल आयी, उसने पहले-पहल अपनी सास के पैर छुए और कहा, "आप मेरे भाग्य को संवारनेवाली देवी हैं। आप जैसा कहेंगी, जो कहेंगी, उसका पालन करूँगी। आगे से आप रसोई-घर में क़दम न रखें। आराम कीजिये और आराम से रहिये। आपकी सेवा करते हुए मुझे बड़ी खुशी होगी।"

कल्याणी बहू के अच्छे स्वभाव पर बहुत प्रसन्न हुई। उस दिन से वह आराम से अपनी ज़िन्दगी काटने लगी। बहू भी अपनी सगी माँ से भी बढ़कर उसकी देखभाल करने लगी। सास को सुखी रखने में उसने कोई कसर नहीं आने दी।

परंतु विवाह के छः महीनों के अंदर ही कल्याणी बीमार पड़ गयी। वैद्यों ने उसकी जाँच की, लेकिन उन्हें भी मालूम नहीं हो पाया कि यह बीमारी है क्या? कल्याणी उठ-बैठ नहीं सकती थी। वह हमेशा थकावट महसूस करती थी और उसे लगता था मानों बदन टूट रहा है। कमज़ोरी के कारण वह बात-बात पर चिढ़ जाती थी। वैद्य भी उसका इलाज नहीं कर सके।

वैद्य कहते थे, "तुम मधुमेह की बीमारी से पीड़ित नहीं हो, रक्तचाप की भी तुम शिकार नहीं हो। तुम्हें अपनी नादानी और चिड़चिड़ेपन पर काबू रखना होगा। तुम्हारा दिल तो एकदम दुरुस्त है। हमारी समझ में नहीं आता कि फिर भी तुम्हारा दिल क्यों ऐसे धड़कता रहता है ?"

वैद्यों की बातों को सुनने के बाद भी कल्याणी अपने को अस्वस्थ महसूस करने लगी। एक दिन शामको सांस निकालने में भी कठिनाई महसूस करते हुए उसने बहू रत्ना से कहा, "बहू...! लगता है, पोता-पोती को देखे बिना ही मेरे प्राण-पखेरू उड़ जायेंगे। मेरे ललाट में यह भाग्य बदा नहीं दीखता।" दुख-भरे स्वर में उसने कहा।

उस दिन रात को रत्ना ने आँसू बहाते हुए यह बात अपने पति रवींद्र से कही और कहा, "कितनी स्वस्थ थीं वे। पता नहीं, उन्हें क्या हो गया। इस हालत में उन्हें देखकर मेरा दिल दर्द से कराह उठता है। कल ही शहर ले जाइये और किसी अच्छे वैद्य को दिखाइये।"

दूसरे ही दिन रवींद्र अपनी माँ को लेकर शहर गया। उस दिन शाम को रत्ना की बड़ी फूफी का बेटा राजा, रत्ना को देखने उसके घर आया। रत्ना ने रोते हुए अपनी सास की बीमारी का विवरण दिया। फिर उसने कहा, "अगर मेरी सास को कुछ हो गया तो मैं ज़िन्दा नहीं रह सकती।"

राजा ने कहा, "किसी काम पर शहर गया था। लौटते हुए तुम्हें देखने की इच्छा हुई, बस चला आया। तुम्हारे पति और सास के शहर से लौटने के बाद फिर आऊँगा। उनकी बीमारी को दूर करने की कोशिश करूँगा।" यों कहकर वह चला गया।

दो दिनों के बाद कल्याणी और रवींद्र शहर से वापस आ गये। वहाँ वैद्यों ने उसकी सब परीक्षाएँ लीं और कह दिया कि वह किसी भी रोग से पीड़ित नहीं है।

उसी दिन शामको जब राजा वहाँ आया तो रत्ना ने उससे प्रार्थना की कि वह उसके सास की परीक्षा करे और बताये कि रोग असल में है क्या ?

राजा ने कल्याणी की नब्ज पकड़ी और परीक्षा का नाटक करते हुए उसने पूछा, "आपका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कता है, आप बहुत कमज़ोरी महसूस करती हैं, है न ?"

"हर वैद्य से मैं यहीं बात कहती हूँ, लेकिन कोई भी मेरी बात का विश्वास नहीं कर रहा है।" कल्याणी ने दुःख भरे स्वर में कहा। राजा ने उसकी आँखों और जीभ का मुआयना किया और कहा, "आप बहुत-सी थकावट भी महसूस करती होंगी? सब कुछ नीरस लगता होगा ?" "हाँ, पलंग से उतरकर चार क़दम भी चल नहीं पाती हूँ, जो भी खाती हूँ, जायकेदार नहीं लगता" कल्याणी ने कहा।

"आप बात-बात पर चिढ़ती भी होंगी और नाराज़ भी होती होंगी, इस रोग के शिकारी को इनकी आदत-सी पड़ जाती है" राजा ने कहा।

केवल नब्ज़ मात्र देखकर उसके रोगों के लक्षणों को बताये जाते रहे राजा को कल्याणी आश्चर्य-भरी आँखों से देखने लगी। उसने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा, "तुम तो मेरे रोगों के बारे में धड़ाधड़ ऐसे बताते जा रहे हो मानों इन्हें तुमने पहले से ही पढ़ लिया। बेटे, हर वैद्य यही दुहराता जा रहा है कि मुझे कोई बीमारी नहीं।" उसकी वाणी में कटुता थी।

राजा ने अपनी थैली में से एक सुंदर डब्बा निकाला और उसे कल्याणी को देता हुआ बोला।

इस डब्बे में चूर्ण है। हर दिन दो बार चुटकी भर का यह चूर्ण भोजन के बाद मुँह में ड़ाल लीजिये। याद रखिये, केवल चुटकी भर का चूर्ण। इसके साथ-साथ थोड़ी बहुत कसरत भी आपको करनी होगी। पिछवाड़े के पौधों को पानी डालते रहिये। शिव मंदिर जाते समय धीरे नहीं तेज़ी से जाया करिए। आपके रोग के सारे लक्षण एक हफ़्ते में ग़ायब हो जायेंगे।

कल्याणी राजा का दिया चूर्ण क्रमानुसार खाती रही, पिछवाड़े में काम भी करती रही और मंदिर जाते समय तेज़ी से भी चलने लगी।

राजा के कहे अनुसार रवींद्र ने एक दिन अपनी माँ से कहा, "माँ...! रत्ना की बनायी रसोई मुझे बिल्कुल अच्छी नहीं लगती। कुछ भी खाने को जी नहीं करता। जीभ मर-सी गयी है। कम से कम एक वक्त ही सही, तुम खाना बनाओ। तुम्हारे हाथों से बनाया खाना खाने को तड़प रहा हूँ। जीभरके खाऊँगा।"

बेटे की बातों से अति प्रसन्न कल्याणी दिन

के समय की रसोई खुद बनाने लगी। दो हफ़्तों तक यों करने के बाद कल्याणी को लगा कि उसका स्वास्थ्य सुधरता जा रहा है। धीरे-धीरे वह चुस्त होती गयी। एक दिन शाम को कल्याणी जब मंदिर गयी तब उसके घर आये राजा ने रत्ना से उसकी सास की तबीयत के बारे में पूछताछ की।

रत्ना ने कहा, "तुम्हारी दवा ने चमत्कार कर दिया। जहाँ तक मुझे मालूम है कि तुम कोई वैद्य नहीं हो, फिर भी ऐसी प्रभावशाली दवाएँ तुम कैसे दे पाये ? उनके रोग का निदान कैसे जान गये ?"

उसके इस प्रश्न पर राजा ने ठठाकर हंसते हुए कहा, "मानता हूँ कि मैंने वैद्य शास्त्र नहीं पढ़ा, किन्तु मानवों के मनोभावों का अच्छा अध्ययन किया। रोगी का रोग दूर होना हो तो उसे वैद्य पर पूरा विश्वास होना चाहिए। लगना चाहिए कि यह वैद्य मेरी बीमारी को दूर करने का सामर्थ्य रखता है। मैंने तुम्हारी सास में ऐसा विश्वास जगाया। इसी कारण मैं अपने लक्ष्य में सफल हो गया। अब रही तुम्हारी सास की बीमारी की बात। वह किसी भी रोग से पीड़ित नहीं हैं। उनका रोग केवल मानसिक है।

एकलौते बेटे की शादी कर देने के बाद साधारणतया सासों को ऐसी बीमारियाँ आती रहती हैं। उन्हें लगने लगता है कि घर में उनकी आवश्यकता महसूस नहीं की जा रही है और उनका बेटा उनके हाथ से फिसल गया।

यह मनोवेदना उन्हें बीमार और अशक्त बना देती है। वे अपने को रोगग्रस्त मानने लगती हैं। मैंने जो दवा दी, वह तो केवल शक्कर मिलाकर कूटा हुआ आटा मात्र है। आगे से अपनी सास से विश्राम करने को न कहना। दोनों मिल-जुलकर घरेलू काम करते रहो। सब विषयों में उनकी सलाहें लेते रहो। सबसे मुख्य बात तो यह है, उन्हें महसूस हो कि तुम्हें उनकी नितांत आवश्यकता है। यह अनुभूति उन्हें सदा तरोताज़ा और चुस्त रखेगी।"

ड्योढ़ी पर खड़े होकर रवींद्र, राजा की ये सारी बातें सुन रहा था। वह उनके पास आकर बोला, "तुम्हारी भलाई हमेशा याद रखूँगा। माँ को तुमने मानो नया जन्म दे दिया", कहते हुए उसने रवींद्र के हाथ अपने हाथ में लिये।

महाभारत

धृतराष्ट्र ने अपने अतिथियों को बड़े ही आदर के साथ कंद, मूल और फल खिलाये और उनके ठहरने का बड़ा अच्छा प्रबंध भी कराया। उस रात को पांडव अपनी माता के चारों तरफ़ लेट गये।

दूसरे दिन वे लोग नारियों तथा पुरोहितों को साथ ले आस-पास के प्रदेश देखने गये। एक स्थान पर उन्हें अग्नि वेदियाँ दिखाई दीं जिनमें आग जल रही थी। उनके सामने बैठकर अनेक मुनि होम कर रहे थे। वहाँ पर अनेक प्रकार के जानवर निडर हो स्वेच्छापूर्वक संचार कर रहे थे। इसी भांति तरह-तरह के पक्षी भी स्वेच्छा के साथ विचरण कर रहे थे। पांडवों ने उस आश्रम में घूम कर देखा। वहाँ का वातावरण बड़ा ही शांत एवं मनोहर था। पांडव बहुत प्रसन्न हुए और उन सबने वहाँ मुनियों को विविध प्रकार के चर्म एवं कंबल भेंट किये। तब वे पुनः धृतराष्ट्र के पास लौट आये।

उस समय महर्षि व्यास अपने शिष्यों के साथ वहाँ पर आ पहुँचे। उन्होंने धृतराष्ट्र से पूछा- "राजन, वनवास तुम्हारे लिए सुखप्रद है न? पुत्र-शोक तुम्हें इस समय व्यथित नहीं कर रहा है न? गांधारी तुम्हारे कारण कष्ट तो भोग नहीं रही हैं न? कुंती देवी तुम दोनों का अच्छा उपचार

कर रही हैं न? मैं समझता हूँ, तुम्हारे लिए यहाँ पर किसी बात का अभाव नहीं है !''

इसके बाद व्यास ने विदुर के जन्म वृत्तांत का रहस्य सुनाया-''विदुर ही वास्तव में युधिष्ठिर हैं। महामुनि मांडव के श्राप के कारण यमराज विदुर के रूप में तुम्हारा भाई होकर पैदा हुआ है। वही यमराज अपने योग बल से युधिष्ठिर में ऐक्य हो गया है। यही उसके जन्मधारण का असली रहस्य है। इसके वास्ते उसने अपने योग बल का उपयोग किया है।''

पांडवों ने अपने परिवार के साथ उस आश्रम में एक महीना बिताया। इसके बाद व्यास महर्षि पुनः एक बार वहाँ पर आ पहुँचे। अनेक कथा-कहानियाँ सुनाकर सबका मनोरंजन किया। इस बीच उस स्थान पर मुनि नारद, पर्वत, देवल, विश्वावसु, तुंबुर तथा चित्रसेन भी आये। धृतराष्ट्र की अनुमति लेकर युधिष्ठिर ने सबका उचित रूप से आदर-सत्कार किया। तब वहाँ पर व्यास, अन्य अतिथि, पांडव, धृतराष्ट्र, आदि के साथ गांधारी, कुंती, द्रौपदी, सुभद्रा इत्यादि नारियाँ भी आ बैठीं। प्राचीन महर्षियों तथा देवता एवं असुरों की कहानियाँ भी कहीं व सुनी गयीं।

एक बार धृतराष्ट्र ने महर्षि व्यास से अपना हृदय खोलकर यों कहा-''आपके आने से मेरा जन्म सफल हो गया। मुझे परलोक का ड़र नहीं है। लेकिन मेरी चिंता तो यही है कि मेरे पुत्रों की दुष्ट बुद्धि के कारण पुण्यात्मा पांडवों ने अपमान का अनुभव किया। अनेक युवक युद्ध में प्राण खो बैठे। मैं नहीं जानता कि युद्ध में मरे हुए मेरे पुत्रों तथा पोतों को न मालूम कौन लोक प्राप्त होगा? रात-दिन मुझे यही चिंता सता रही है। इसलिए मेरा चित्त अशांत है।''

धृतराष्ट्र के मुँह से ये शब्द निकलते ही गांधारी का दुख उमड़ पड़ा। उसके स्वर में स्वर मिला कर कुंती, द्रौपदी, सुभद्रा तथा अन्य स्त्रियाँ रोने लगीं।

गांधारी ने हाथ जोड़ कर व्यास को प्रणाम करके बताया-''मेरे पुत्रों का देहांत हुए सोलह साल बीत गये। तब से मेरे पति रात-दिन उनके वास्ते विलाप कर रहे हैं। द्रौपदी अपने पुत्र तथा भाइयों के वास्ते रो रही है। सुभद्रा अभिमन्यु के वास्ते रो रही है। भूरिश्रव की पत्नी अपने ससुर, पति, व पुत्रों को खोकर उनकी याद में विलाप कर रही है। हमारे पुत्रों की सौ पत्नियाँ व्यथित हैं। इन सभी लोगों के दुख को दूर करने का कोई उपाय हो तो बताइए ?''

व्यास ने कुंती देवी से पूछा-"बताओ, तुम्हारे मन में कोई दुख है, वह क्या है?" उसने बताया कि वह कर्ण के लिए विलाप कर रही है।

तब व्यास ने गांधारी से कहा-"तुम अपने पुत्रों तथा सभी रिश्तेदारों को भी देखोगी। कुंतीदेवी कर्ण को, सुभद्रा अभिमन्यु को, द्रौपदी अपने पुत्र, पिता व भाइयों को भी देखेगी। यह विचार मेरे मन में पहले से ही था। उसे तुमने व कुंती ने प्रकट किया। तुम्हें किसी के भी वास्ते दुखी होने की आवश्यकता नहीं। महाभारत युद्ध में मृत्यु को प्राप्त हुए सभी लोग या तो देवता हैं या राक्षस। धृतराष्ट्र एक गंधर्व राजा हैं। पांडु राजा मरुत्त गण से संबंधित हैं। विदुर तथा युधिष्ठिर यमराज के अंश से पैदा हुए हैं। इसी प्रकार दुर्योधन कलि, शकुनि द्वापर हैं। दुश्शासन आदि सभी राक्षस अंश के हैं।

भीम वायु के अंश में, अर्जुन नर नामक एक महर्षि के अंश में, नकुल व सहदेव अश्वनी देवताओं के अंश में, अभिमन्यु चंद्र के अंश में, द्रौपदी तथा धृष्टद्युम्न अग्नि के अंश में पैदा हुए हैं। शिखंडी राक्षस के अंश में पैदा हुए हैं। इसी भाँति बृहस्पति के अंश में द्रोणाचार्य, शंकर के अंश में अश्वत्थामा, पैदा हुए हैं। भीष्म वसुओं में से एक हैं। तुम सब लोग विलंब किये बिना अभी भागीरथी के तट पर जाओ। युद्ध में मरे हुए सभी लोगों को तुम्हें वहाँ पर दिखा कर मैं तुम्हारे दुख को दूर करूँगा।"

ये बातें सुनते ही सब का उत्साह उमड़ पड़ा। फिर क्या था, उसी वक्त सब लोग गंगा के तट की ओर चल पड़े। धृतराष्ट्र अपने साथ पाँडव,
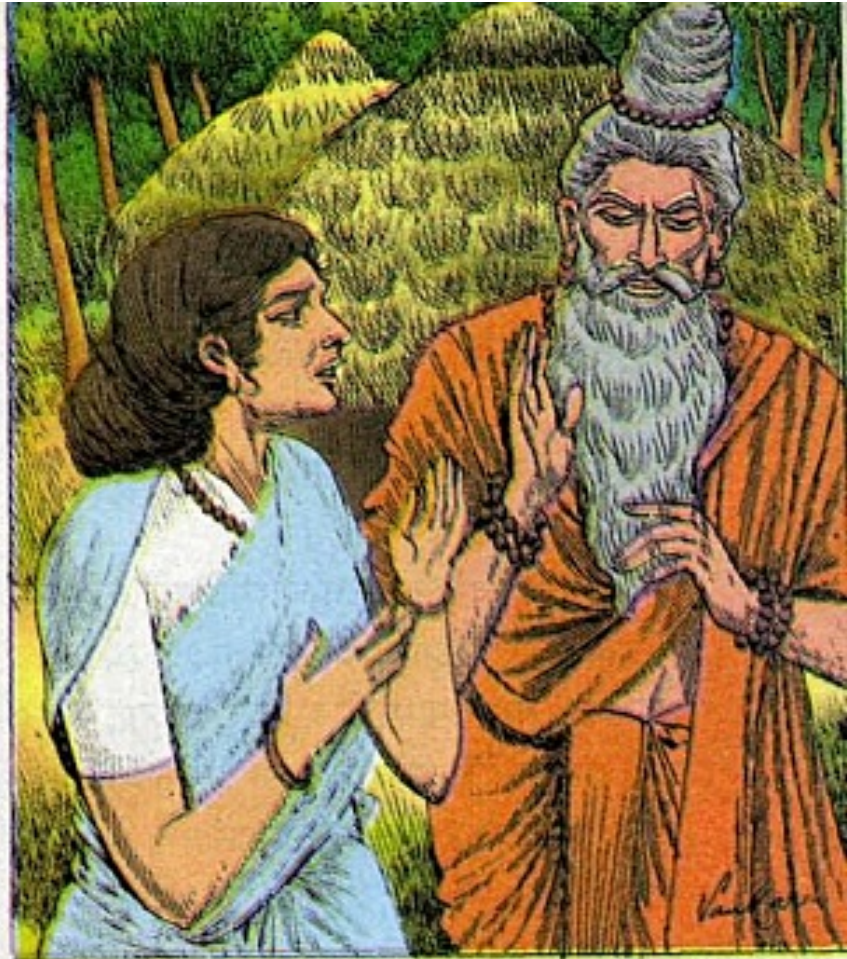
मुनि तथा अन्य लोगों को लेकर चल पड़ा। सब लोग गंगा के तट पर पहुँच कर उहिच स्थान में दिन भर विश्राम करते रहें। सूर्यास्त हो गया। सबने तत्काल स्नान करके कालकृत्य समाप्त किये।

इसके उपरांत सब लोग महर्षि व्यास के पास पहुँचे। तब व्यास ने गंगा जल में डुबकियाँ लगायीं और पाँडव तथा कौरव योद्धाओं, महाभारत के युद्ध में मृत्यु को प्राप्त सभी वीरों को भी व्यास ने उच्च स्वर में पुकारा।

तुरंत नदी के तट पर बड़ा कोलाहल सुनाई दिया। भीष्म, द्रोण आदि एक-एक करके नदी में से तट की ओर आने लगे। विराट, द्रुपद, उप पांडव, अभिमन्यु, घटोत्कच, कर्ण, दुर्योधन, इत्यादि पहले जिन-जिन पोशाकों में युद्ध भूमि में गये थे, उन्हीं वेषों में, उन्हीं वाहनों पर गंगा जल में से बाहर आये। अब उनके बीच कोई

शत्रुता नहीं थी ! व्यास ने अपने तपोबल से धृतराष्ट्र को दृष्टि प्रदान की। गांधारी तथा धृतराष्ट्र अपने-अपने आत्मीय व्यक्तियों को दिल खोलकर अच्छी तरह देख पाये। बाक़ी लोगों को भी मृत व्यक्तियों को इस प्रकार प्रकट होते देख एक अद्भुत-सा प्रतीत हुआ और उनके शरीर पुलकित हो उठे।

जीवित व्यक्तियों ने मृत व्यक्तियों के साथ मिलकर अनुपम आनंद प्राप्त किया। पांडव कर्ण, अभिमन्यु तथा उपपांडवों से मिले। वह रात सबने बड़ी प्रसन्नता के साथ बिताई। इसके बाद मृत व्यक्ति जैसे प्रकट हुए, उसी प्रकार गंगा में प्रवेश करके अदृश्य हो गये। जो-जो लोग जिन लोकों से आये थे, वे उन-उन लोकों में चले गये।

इसके बाद व्यास ने जीवित कौरव नारियों से कहा-"तुममें से यदि कोई अपने पतियों के साथ उनके लोकों में जाना चाहती हो, तो नदी में प्रवेश करो।" तब धृतराष्ट्र की सभी बहुएँ अपनी सास तथा ससुर की अनुमति लेकर गंगा जल में उतर गयीं।

इस घटना के बाद धृतराष्ट्र का दुख पूर्ण रूप से समाप्त हो गया। वह बड़े ही शांतचित्त हो अपने आश्रम को लौट आया। एक महीने से अपने साथ रहनेवाले पांडवों को सचेत किया कि वे हस्तिनापुर को लौटकर अपने राज्यशासन का कार्य संभाल लें। वास्तव में युधिष्ठिर के मन

में उस स्थान को छोड़ने की इच्छा न थी। न राज्य-शासन करने की ही इच्छा थी। उसे राज्य सूना लगने लगा था।

युधिष्ठिर ही की भाँति सहदेव के मन में भी कुंती को छोड़ जाने की इच्छा न थी। मगर कुंती ने उन लोगों को हस्तिनापुर लौट जाने पर ज़ोर दिया। उन्हें विवश होकर लौटना पड़ा। धृतराष्ट्र ने सभी पांडवों के साथ गले लग कर उन्हें विदा किया। तब युधिष्ठिर सपरिवार हस्तिनापुर के लिए चल पड़ा।

इसके थोड़े समय बाद युधिष्ठिर को देखने नारद आ पहुँचा। युधिष्ठिर ने उनका समस्त प्रकार से सत्कार करके कुशल-प्रश्न पूछा। नारद ने बताया कि वह गंगा के तट पर तपोवनों को देख लौट रहा है, तब युधिष्ठिर ने पूछा-"क्या आपको मेरे काकाजी दिखाई दिये? वे कुशल हैं? गांधारी, कुंती और संजय कैसे हैं?"

इस पर नारद ने यों जवाब दिया: "युधिष्ठिर! तुम लोगों के वहाँ से लौटने के बाद धृतराष्ट्र गांधारी तथा कुंती के साथ कुरुक्षेत्र से गंगा द्वार चले गये। संजय तथा याजक ब्राह्मण अग्निहोत्र ले गये। गंगा द्वार के पास तुम्हारे काकाजी ने वायुभक्षण करते छः महीनों तक कठोर तप किया। गांधारी ने केवल जलग्रहण किया।

कुंती ने मासोपवास का व्रत लिया। संजय ने दिन में एक जून भोजन किया। याजक अनवरत अग्निहोत्र करते रहें। इसके बाद धृतराष्ट्र किसी का ख्याल किये बिना वनों में घूमने लगे। गांधारी और कुंती उनके पीछे चलती रहीं। कुंतीदेवी गांधारी का सदा सर्वदा ख्याल रखती थीं। इतने में एक दिन धृतराष्ट्र गंगा में स्नान करके अपने आश्रम की ओर लौट रहे थे, तब प्रचण्ड बायु बह चली जिससे देखते-देखते आग सारे जंगल में फैल गयी।

दावानल के अपने निकट आते जानकर धृतराष्ट्र ने संजय से कहा-"तुम इसी वक्त उस दिशा में चले जाओ, जिस ओर अग्नि न हो। हम इस आग में जलकर उत्तम लोकों को प्राप्त हो जायेंगे। हमारे विचार को अब कोई बदल नहीं सकता। तुम्हें मेरे इस अंतिम आदेश का पालन करना ही होगा।"

संजय ने बड़ी आतुरता के साथ कहा- "राजन, आपका अग्नि में जल मरना मुझे पसंद नहीं है। आग ने चारों तरफ़ से आपको घेर लिया है। अब क्या करें?"

"संजय, तपस्वी लोग बायु, जल और अग्नि-इनमें से किसी के द्वारा भी मरने को तैयार

हो जाते हैं। तुम विलंब न करके यहाँ से चले जाओ।'' धृतराष्ट्र ने उसे आदेश दिया।

संजय ने धृतराष्ट्र, कुंती तथा गांधारी की भक्ति एवं श्रद्धापूर्वक प्रदक्षिणा की और उन्हें योगसमाधिस्थ हो जाने को कहा। तीनों ने ऐसा ही किया। उनके शरीर लकड़ियों जैसे हो गये। संजय दावानल से निकलकर गंगा तट पर पहुँचा और नारद को देखा। धृतराष्ट्र, गांधारी तथा कुंती दावानल में जल गये। यह बात संजय नारद को सुनाकर हिमालयों में चले गये।

यह समाचार मिलते ही पांडव के साथ सारे नगरवासी शोक में डूबे गये। इस पर नारद ने युधिष्ठिर को समझाया कि दावानल के लिए कारण बनी हुई अग्नि धृतराष्ट्र की ही है, अपनी अग्नि के द्वारा मृत्यु को प्राप्त करके धृतराष्ट्र उत्तम लोक को प्राप्त हुए हैं।

युधिष्ठिर ने गंगा के निकट पहुँचकर मृत व्यक्तियों के लिए जल तर्पण किये। बाद श्राद्ध करके बारहवें दिन दान आदि किये। महाभारत युद्ध की समाप्ति के अट्ठारह वर्ष बाद धृतराष्ट्र की मृत्यु हो गयी। उनमें अंतिम तीन वर्ष उन्होंने वनवास में बिताये थे।

धृतराष्ट्र की मृत्यु के बाद और अट्ठारह वर्ष तक युधिष्ठिर ने राज्य किया। उस वक्त उन्हें एक भयंकर समाचार मिला। वह यह कि मूसल के कारण समस्त यादव मर गये हैं। केवल कृष्ण और बलराम बच गये हैं।

युधिष्ठिर ने अपने भाइयों को बुलाकर पूछा- ''सुनते हैं कि यादव सब आपस में लड़ मरे हैं। अब बताओ, हमें क्या करना है?''

यादवों के विनाश का कारण यों था : एक बार विश्वामित्र, कण्व तथा नारद महर्षि द्वारका में गये। उन्हें आते देख सारण इत्यादि यादवों ने सांबु को औरत का वेष बनाया। उसे मुनियों को दिखाकर पूछा-''यह तो गर्भवती है। इसका पति लड़का चाहता है। तुम लोग बताओ कि इसका कौन शिशु होनेवाला है?''

इस पर मुनियों ने जवाब दिया-''वृष्ठि एवं अंधकों का विनाश करनेवाला एक मूसल सांबु के गर्भ से पैदा होगा।''

इसके बाद मुनियों ने कृष्ण के दर्शन करके उन्हें वास्तविक समाचार सुनाया। कृष्ण ने यह समाचार जानकर मन में निश्चय कर लिया कि मुनियों का श्राप व्यर्थ नहीं जायेगा। **(क्रमशः)**

राजमहिषी की रसोई

जगदीश्वरी देवी राजा बीरसेन की राजमहिषी थीं। दोनों जनता का आदर्श बनकर जीवन व्यतीत कर रहे थे।

एक कार्तिक मास में पूर्णचंद्रमा के दिन राजा और रानी विहार करने समुद्र तट पर गये। समुद्र के किनारे ही एक झोंपड़ी थी, जिसमें मछुआरे दंपति रह रहे थे।

उस समय वे दोनों झोंपड़ी के बाहर सुतली से बुनी चारपाई पर बैठकर खा रहे थे। मछुआरे ने बरतन से तरकारी निकालकर अपनी थाली में परोसते हुए कहा, ''लच्छी, तुम अपने हाथों से जो भी बनाती हो, अमृत लगता है। मछली का यह शोरबा कितना ही स्वादिष्ट है। झिंगे का यह शोखा, वाह, कितनी ही तारीफ़ करें, कम है।'' वह पत्नी की तारीफ़ किये जा रहा था।

मछुआरे की पत्नी, पति की तारीफ़ पर मुग्ध होकर कहने लगी ''कल तुम्हारे लिए ऐसी मछली की शोखा बनाऊँगी, जिसे एक बार खाओगे तो रोज़ वही खाने की ज़िद करने लगोगे।'' उसकी आवाज़ में खुशी ही खुशी थी।

इस दृश्य ने रानी के दिल पर अमिट छाप डाल दी । रानी ने उसी क्षण निश्चय कर लिया कि आगे स्वयं ऐसा खाना बनाएँगी, जिसे खाकर उसके पति बीरसेन उसकी तारीफ़ के पुल बांध देंगे।

दूसरे ही दिन उसने रसोई-घर से सब रसोइयों को बाहर भेज दिया। मेहनत लगाकर उसने खुद रसोई बनायी। उसी के पकाये व्यंजन रसोइयों ने राजा को परोसा।

राजा खाना शुरु कर दे, इसके पहले ही रानी ने कहा ''ज़िन्दगी में पहली-पहली बार मैंने अपने हाथों आपके लिए खाना बनाया। स्वाद चखकर आपको बताना है कि आपको कैसे लगा?''

रानी के बनाये पकवान राजा के पेट में गये कि नहीं, राजा को कै कर देने की इच्छा हुई। दाल में नमक नहीं तो किसी एक तरकारी में मिर्च ही मिर्च था। ऊपर से वह जलकर काला भी हो गया। खीर का दूध भी फट गया था।

पर वह रानी को निराश करना नहीं चाहता था, सच बताकर उसके दिल को तोड़ना नहीं चाहता था, इसलिए रसोई की तारीफ़ करते हुए उसने कहा

'मीरा सिंह'

''रसोई अमृत के समान स्वादिष्ट है। मैंने सपने में भी कल्पना नहीं की कि तुम इतनी अच्छी रसोई बना सकती हो।''

इस प्रशंसा से रानी के आनंद की सीमा न रही। किन्तु जब खुद खाने लगी तो उसे कोई भी व्यंजन रुचिकर नहीं लगा। फिर भी उसने निश्चय कर लिया कि चूँकि उसके पति को उसकी रसोई अच्छी लगी, इसलिए उसे भोजन के विषय में थोड़ा-बहुत त्याग करना ही पड़ेगा। अपने पति से कहा ''आगे से मैं खुद रसोई बनाऊँगी। उसे अमृत मानकर आप सानंद खाते रहियेगा।''

उसकी बातें सुनते हुए राजा संकट में पड़ गया। उसे लगा मानों गले में कुछ अटक गया। हर रोज़ उसके हाथ से बने खाना खाने की कल्पना मात्र से वह भयभीत हो गया और कहने लगा ''महारानी, तुम्हें इतना कष्ट उठाने की क्या ज़रूरत?'' उसने उसे समझाने की कोशिश की।

पर रानी ने राजा की बातों को टालते हुए कहा, ''पति के लिए रसोई बनाना भला पत्नी के लिए कष्ट कैसे हो सकता है? कोई भी भारतीय नारी ऐसा समझने की हिम्मत नहीं कर सकती'' उसने साफ़-साफ़ कह दिया।

उस दिन से राजा मुश्किलों में फंस गया। वह सपने देखने लगा कि रानी तरह-तरह के पकवान बना रही है और उसे खाने के लिए मजबूर कर रही है। एक हफ़्ते के अंदर ही उसे जीवन से विरक्ति हो गयी।

इस कठोर और गंभीर समस्या के परिष्कार के कई मार्ग उसने सोचे-विचारे, पर उसे कोई सही मार्ग नहीं सुझा। आख़िर उसने अपने आस्थान के विदूषक बलराम को बुलाया और उससे कहा ''बलराम, रानी की रसोई के भय से तुम ही मुझे

उबार सकते हो। जो भी करना है, शीघ्र करना और मुझे बचाना।''

''डरिये मत महाराज, चक्रवर्ती के जन्म-दिन के उत्सव में भाग लेकर चार-पाँच दिनों में लौट आऊँगा। लौटते ही इस भय की दलदल से आपको निकालूँगा और आपकी रक्षा करूँगा'' यों विदूषक ने राजा को धैर्य दिया।

चक्रवर्ती का जन्म-दिन व राजा बीरसेन के पिता के श्राद्ध का दिन एक ही समय पर पड़ते हैं। इस कारण अब तक किसी भी दिन उसने चक्रवर्ती के जन्म-दिन के उत्सवों में भाग नहीं लिया। परंतु इस बार के उत्सव मे़ एक ख़ासियत है। उनके विवाह के बाद यह पहला जन्म-दिन मनाया जा रहा है और यह बड़े पैमाने पर मनाया जा रहा है। लोगों का यह कहना भी है कि चक्रवर्ती की पत्नी बड़ी ही लावण्यमयी हैं।

उत्सवों में भाग लेने के बाद चार दिनों में विदूषक बलराम लौटा। रानी जगदीश्वरी देवी ने उसे अपने अंत:पुर में बुलवाया। वह यह जानने के लिए आतुर

थी कि चक्रवर्ती की पत्नी कितनी सुंदर है।

"उत्सव क्या बड़े पैमाने पर मनाये गये? सुना कि चक्रवर्ती की पत्नी बड़ी ही लावण्यमयी है। क्या यह सच है?" रानी ने विदूषक से पूछा।

विदूषक ने निराशा जताते हुए कहा, "सच कहा जाए तो आपके मुखड़े में जो आभा है, जो कांति है, उनके मुखड़े में कहाँ? मशाल लेकर ढूँढ़ेगें तो भी वे कहीं दिखायी नहीं पड़ेंगीं। आपका सौंदर्य सहज है। उसका सौंदर्य तो अलंकारों के कारण है, जो कृत्रिम है। परंतु लगता है, आजकल ज़्यादा समय आप रसोई-घर में खपा रही हैं। यह आदत तो आपके लिए बिल्कुल नयी है। धुएँ के कारण आपके मुख की कांति कम होती जा रही है। आँखें लाल-लाल दिख रही है, आपके चर्म का रंग उड़ता नज़र आ रहा है।"

यह सुनते ही रानी का चेहरा फीका पड़ गया। यह जानकर उसके दिल को ठेस लगी कि खुद पकाने का काम शुरु कर देने के बाद उसके मुख की कांति जाती रही।

विदूषक रानी के चेहरे पर बदलते भावों को ध्यान से देखने लगा। उसने कहा "महारानी जी, किन्तु चक्रवर्ती की पत्नी की एक विशिष्टता के बारे में आपको बताना ही पड़ेगा।"

रानी ने तुरंत पूछा "वह क्या है?"

उत्सवों के समय चक्रवर्ती दंपति ने सबके साथ बैठकर खाया। चक्रवर्ती की पत्नी ने वहाँ रखे गये चौबीस पकवानों में से पति को स्वादिष्ट लगनेवाले पकवानों को चुना और उन्हें स्वयं परोसा। उसे यों परोसते हुए देखकर चक्रवर्ती मन ही मन उसकी प्रशंसा करने लगे, क्योंकि वे उनकी पसंद के पकवान स्वयं परोस रही थीं। संतुष्ट होकर महाराज के खाने का वह दृश्य कितना ही मनोहर दृश्य है। वहाँ सुनने में आया कि अंत:पुर की स्त्रियाँ रसोई-घर की तरफ़ झांकती तक नहीं। वे केवल अपने रिश्तेदारों और पतियों को खाना परोसने का ही काम करती हैं"। विदूषक ने कहा।

उस दिन से रानी ने खुद पकाने का काम छोड़ दिया। रसोइयों के बनाये पकवान व व्यंजन खुद पति को परोसने का काम संभालने लगी।

राजा के कष्ट यों दूर हो गये। अब उसके सुख के दिन आ गये। राजा ने विदूषक की इस सफलता पर खुश होकर उसे मोतियों का एक हार भेंट में दिया।

चंदामामा प्रस्तुति
अजेय गरूड़ा
चित्र : फानि
मुख्यमंत्री का बेटा आदित्य, जिसे चन्द्रपुरी में बुलाया गया और उसने जनता को परेशान करनेवाले डाकुओं को कैद कर लिया। अरुणा ने उसे बताया कि उसके पिता और अरुणा के पिता दोनों एक ही रात में मृत्यु को प्राप्त हो गए। अरुणा ने आदित्य को एक पुस्तक दी। आदित्य ने अपने पिता की लिखावट पहचान ली। किताब में गरुड़ा और उसकी माता की कहानी है।
आगे...

वह क्या है? समाचार पढ़ो।
जैसे ही राजा, मंत्री और आदित्य डाकुओं के नेता को पकड़ने की योजना बना रहे थे तभी एक चील ने कागज का एक पर्चा गिराया।

यदि तुम मेरे आदमियों को नहीं छोड़ोगे तो गरुदादरी जंगल में रबिन्द्र को मृत पाओगे!
मेरा बेटा! क्या होगा उसके साथ?

राजा कुछ कहने से पूर्व ही काँप गया।

मैं आपको बताना चाहता हूँ महाराज कि जब तक ये डाकुओं के सरदार आजाद घूम रहे हैं हम लोग सुरक्षित नहीं हैं।

वैसे भी यह स्पष्ट है
कि सेनापति मुझे पसंद
नहीं करते !
यह शर्म की
बात है ! उन्हें छोड़ दो !
रविन्द्र किसी भी हाल में
सुरक्षित होना
चाहिए !
जैसा आप
चाहें महाराज !

सारे डाकू छोड़ दिए गए।

आदित्य रविन्द्र देव को बचाने
के लिए चल दिया।

एक गुफा से बड़ी रहस्यमय आवाज
आदित्य को सुनाई पड़ती है।

गुफा के द्वार पर मुखौटा पहने
घोड़े पर सवार एक व्यक्ति
दिखाई दिया जिसके हाथ पीछे
की ओर बंधे हुए थे।
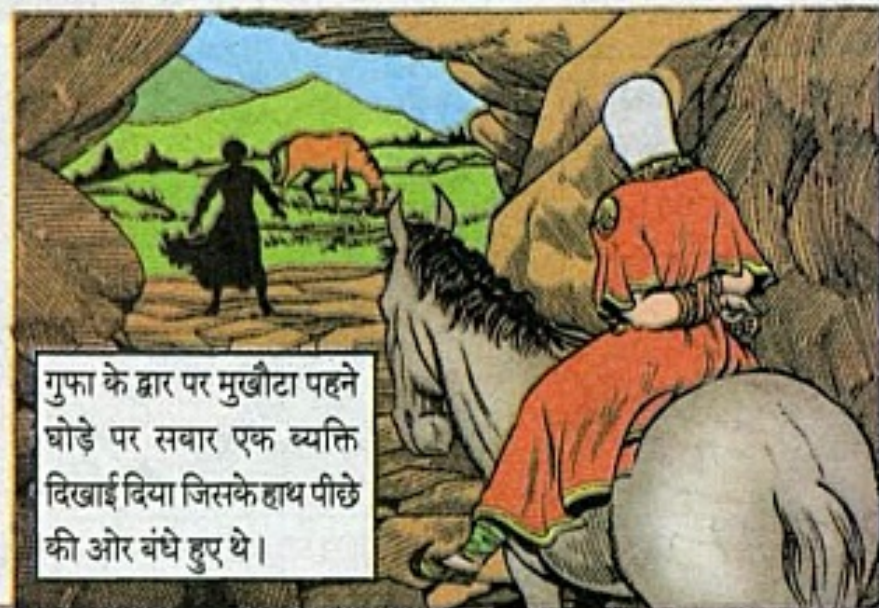
जैसे ही उसने उसका नकाब, हटाया, आदित्य अपनी हँसी रोक न सका।

बड़े उत्साहित, रविन्द्रदेव आज हारे हुए लग रहे थे।

यदि तुम नहीं भी आए होते तो भी मैं उन गुण्डों को खत्म कर देता।

पहाड़ी राज्य पूरी तरह से चाँदनी में नहाए हुए थे। एक आदमी वेश बदलकर पहरे पर खड़ा था...

...जब गुफा के भीतर एक सम्मेलन चल रहा था।
यह गरुडा कौन है?
उसने हमें छोड़ क्यों दिया?

राम सिंह गुफा से बाहर आता है और चलकर उस रहस्यमय आदमी के पास जाता है।
तुम्हारा धन्यवाद, हम लोग आजाद हो गए। लेकिन तुम कौन हो?
क्या तुम मुख्यमंत्री के अंगरक्षक नहीं थे?

क्या यह नहीं सोचते कि जो कुछ तुम लोग कर रहे हो, वह कानून के विरुद्ध है?

यह सत्य है कि मैं उनका अंगरक्षक था। मैंने सेनापति के भीरु स्वभाव को देखा। मुझे छिपना ही पड़ा नहीं तो वह मुझे मार डालता।

हाँ कहते जाओ!
रविन्द्र लोगों को लूट रहा था। उनकी कठिनाईयों की कोई सीमा न थी। इसलिए हम लोग क्रांति पर उतर आए।
क्या तुम पूरे विश्वास से कह सकते हो कि सेनापति ने ही मुख्यमंत्री को मारा?

सेनापति राजा के कक्ष में प्रवेश करता है। नजदीक पहुँचने से पूर्व उसने पैरों की आवाज सुनी। यह मुख्यमंत्री था। वह उन लोगों की बातें सुनने के लिए छिपा हुआ था।

महाराज, लोगों में त्रासदी है। वे लोग रविन्द्र के कार्यों की आलोचना कर रहे हैं।

तो, सेनापति मुख्यमंत्री को घटना से परे रखने के लिए सोच रहा था।

तब राजा ने आदित्य को भेजा। उसने हमारी योजना असफल कर दी। लेकिन यह निर्दोष है। चलो मुझे जाने दो।
राम सिंह!
अपना नाम सुनकर वह एक मुस्कुराते हुए चेहरे को देखने के लिए मुड़ा।
क्रमशः

चन्दामामा

समाचार विशेषताएँ

राष्ट्रीय

गुजरात में पर्यटन प्रभावित

२६ जनवरी २००१ को आए भूकम्प ने गुजरात में भारी तबाही मचा दी है, जिससे जन-जीवन तो प्रभावित हुआ ही और अब तो लोगों की छुटियाँ और यात्रायें भी प्रभावित हो रही हैं। हजारों गुजराती प्रत्येक वर्ष अपनी गर्मियों की छुट्टियाँ बिताने विदेश जाया करते हैं। परन्तु इस वर्ष कच्छ में भूकम्प आने से इन पर्यटको की संख्या में भारी गिरावट होने की सम्भावना है। यात्रा एजंटों का कहना है कि बुकिंग ४० प्रतिशत तक कम हो सकती है। बहुत सारे परिवार जो विदेश जाने की योजना बना रहे थे, वे भूकम्प से बुरी तरह प्रभावित हुए हैं।

केन्द्रिय बजट-हंसना और सिसकना

भारतीय सरकार ने उन विद्यार्थियों के लिए एक अच्छी योजना की घोषणा की है जो विदेश जाकर उच्च तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक हैं। विदेश जानेवाले विद्यार्थी बैंको से १५ लाख रूपये का कर्ज ले सकते हैं और अपने ही देश में रहकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अभिलाषी विद्यार्थी ७.५ लाख रूपये कर्ज ले सकते हैं।

इस योजना की घोषणा वर्ष २००१-२००२ के सामान्य बजट के दौरान की गई। इसे वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा ने २८ फरवरी को संसद में पेश किया।

बच्चों और युवाओं के लिए रूचिकर विषय यह है कि बजट में चीनी की कीमत बढ़ा दी गई है। जिससे चॉकलेट, बिस्कुट और अन्य मीठी वस्तुओं के मूल्यों में स्वत: वृद्धि हो जायेगी।

परन्तु दूसरी ओर सॉफ्ट ड्रिंक के मूल्यों को कम करने की भी घोषणा की गई, जिससे कि शक्कर की बढ़ी कीमत को सामान्य किया जा सके। वैसे भी ये उत्पाद किशोरा पीढ़ी के पसंदीदा हैं। छोटे बच्चे खिलौनों और जूते-चप्पलों के दाम कम होने से काफी खुश होंगे।

डाक खर्च में वृद्धि होने से उन लोगों पर काफी प्रभाव पड़ेगा जो मित्रों को चिट्ठियाँ लिखते हैं और कुछ किताबें डाक द्वारा मंगवाते हैं। प्रतियोगिता पोस्ट कार्ड का मूल्य भी चार रूपये से पाँच रूपये हो रहा है। हमारी युवा पीढ़ी अब घूमना-फिरना और बढ़ा देगी क्योंकि दुपहिए वाहनों के दाम कम हो गए हैं।

शोर-गुल आपका व्यवहार बदल देता है

यदि आपको पढ़ने में कोई समस्या है, या आप ध्यान लगाकर पढ नहीं पा रहे, तो सबसे पहले अपने आस-पास के वातावरण का मुआयना कीजिए। क्योंकि हाल ही में विश्व स्वस्थ्य संगठन द्वारा आयोजित एक सर्वेक्षण से पता चला है कि अधिक शोर-गुल से आपके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और इससे चिंता तथा हृदय-घातक रोग

होने की आशंका रहती है। इसके अतिरिक्त आपका दिन प्रतिदिन का कार्य भी प्रभावित होता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार ८० डिसीबल ध्वनि-प्रदूषण चिड़चिड़े स्भाव को बढ़ाता है। कुछ मामलों में यह सामयिक अथवा स्थाई रूप से सुनने की शक्ति को भी क्षीण कर देता है।

अन्तर्राष्ट्रीय

एक भारतीय "ऑल-इंगलैण्ड चैम्पियन"

पी. गोपीचन्द भारत के दूसरे ऐसे खिलड़ी हैं जिसने ऑल इंगलैण्ड बैंडमिन्टन चैम्पियनशिप में विजय हासिल की। बिर्मिंघम में चीन के चेन हॉंग को हराकर उन्होंने भारत का नाम ऊँचा किया है।

गोपी चन्द को विश्व में दसवाँ स्थान प्राप्त है। इससे पहले उन्होंने सेमी फाईनल में विश्व के उच्च वरीयता प्राप्त खिलाड़ी डेनमार्क के पीटर गेडे को हराया।

पहले भारतीय खिलाड़ी हैं प्रकाश पादुकोने जिन्होंने १९८० में यह पुरस्कार प्राप्त कर एक कीर्तिमान स्थापित किया। अपने संदेश में प्रकाश पादुकोने ने कहा कि "गोपी की विजय ने यह प्रमाणित कर दिया है कि भारतीय भी विश्व उच्चमान स्थापित करने में सफल हैं। यह भारतीय बैडमिन्टन के लिए एक महान दिन है।

डॉन की यादें

क्रिकेट का बुखार और बढ़ा। जब भी प्रतियोगी टीम अन्तराष्ट्रीय मैच जीतने के लिए संघर्ष करेगी तो, एक महान व्यक्ति की अनुपस्थिति महसूस होगी। सर डोनाल्ड ब्रैडमैन २०वीं शताब्दी के महान क्रिकेट खिलाड़ी माने गए।

उन्होने ९९.९४ के अनुपात में ६,९९६ रन बनाए। डॉन, जो इसी नाम से प्रसिद्ध थे, उन्होनें मात्र ५२ टैस्ट मैचों में ये रन स्थापित किए। डोनाल्ड जार्ज ब्रैडमैन का जन्म २७ अगस्त १९०८ में कूटामुन्दरा न्यू साउथ वेल्स, आस्ट्रेलिया में हुआ। वे अपने माता पिता के पाँच बच्चों में सबसे छोटे थे। उनके पिता एक बढ़ई का कार्य करते थे।

डॉन ने अपने सकूल के दिनों से ही क्रिकेट खेलना आरम्भ किया। वे हमेशा पानी के टैंकों के ऊपर गोल्फ की बाल फेंककर और उसे स्टम्प से मारकर अभ्यास किया करते थे।

डॉन ने १९२८ में ब्रिसवाने में हुए क्रिकेट टैस्ट मैच में ईंगलैण्ड के खिलाफ प्रतिमान बनाया। वहाँ से उन्होनें जो आरम्भ किया तो फिर कभी पीछे मुड़कर नही देखा। पूर्णत: उन्होने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में २८, ६०७ रन बनाए। उनकी यह रन संख्या ३३८ पारियों में ११७ शतकों में शमिल है।

१९४९ में उन्हें क्रिकेट के लिए 'सर' की उपाधि प्रदान की गई।

बुद्ध प्रतिमा को हानि

सबसे लम्बी खड़े हुए बुद्ध की प्रतिमा तथा विश्व प्रसिद्ध बामियान बुद्ध प्रतिमा को हाल ही में अफगानिस्तान में तालिबानियों ने तोड़ डाला।

तालिबानी सिपाहियों ने दोनों प्रतिमाओं को नष्ट करने के लिए मिसाईल और हवाई जहाज ध्वस्त करनेवाले हथियारों का प्रयोग किया।

तालिबानी अफगानिस्तान के इस्लामिक उग्रवादी हैं। सन् १९९४ से उनकी शक्तियाँ काफी बढ़ गई हैं। तालिबान के सूचना और संस्कृतिक मंत्री मौलवी कुदरातुल्लाह जमाल ने घोषणा की है कि ये उग्रवादी गत कुछ वर्षों से गैरइस्लामिक प्राचीन प्रतिमाओं को पूरे देश में नष्ट कर रहे थे।

दो बुद्ध प्रतिमाएँ तीसरी, चौथी और पाँचवी शताब्दी की थीं। बामियान बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध ये प्रतिमाएँ १९६० में नौ विदेशी भूतत्व वेत्ताओं द्वारा प्राप्त की गई थीं। उसके बाद अफगानिस्तानी सरकार ने विदेशी खोजियों को उनके प्राचीन तत्वों को पुनः प्राप्त करने के लिए धन्यवाद भी दिया था।

जीत किसकी?

मगध राजा के दो पत्नियाँ थीं। दोनों ने एक ही दिन एक ही क्षण में एक-एक पुत्र को जन्म दिया। एक लड़के का अमरसिंह और दूसरे का जयसिंह नामकरण किया गया।

दोनों लड़के रूप और ताकत में एक दूसरे से कम न थे।सभी विद्याओं में दोनों समान निकले। युद्ध-विद्याओं में एक दूसरे की समता रखते थे।

मगर उन दोनों में एक अंतर था। अमरसिंह जहाँ घुड़-सवारी और खड्ग युद्ध में निपुण था, वहाँ जयसिंह हाथी की सवारी और मल्ल युद्ध में। दोनों राजकुमारों के बीच अत्यंत स्नेहभाव था।

राजा वृद्ध हो चुके थे। उनके मन में यही चिंता खाये जा रही थी कि दोनों में से किसको गद्दी दी जाय! दोनों राजकुमारों का एक ही दिन जन्म हुआ है। इसलिए छोटे-बड़े का सवाल ही नहीं उठता था। राज्य के भी दो टुकड़े नहीं किये जा सकते थे। इसलिए उन दोनों की योग्यताओं की जांच करके उनमें जो अधिक योग्य हो, उसी को शासन का भार सौंपा जाना चाहिए। राजा तथा मंत्री ने कई दिन तक विचार करके यह निर्णय लिया। मगर उनके लिए यह निर्णय करना संभव न हो सका, कि इन दोनों राजकुमारों में कौन अधिक योग्य है।

राजकुमार बिलकुल यह नहीं जानते थे कि राजगद्दी के बारिस के बारे में राजा और मंत्री बिचार कर रहे हैं।

उन्हीं दिनों में कौशिक देश की राजकुमारी के स्वयंवर का प्रबंध किया गया था। उसमें यह घोषणा की गयी थी कि स्वयंवर के समय विविध प्रकार की विद्याओं की प्रतियोगिताएँ चलायी जायेंगी और जो उन सब में सफल निकलेगा

२५ वर्ष के पहले चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

उसके साथ राजकुमारी का विवाह किया जाएगा।

यह समाचार सुनने पर राजा और मंत्री ने दोनों राजकुमारों को स्वयंवर में भेजने का निश्चय किया। उनका विश्वास था कि वहीं पर उन दोनों की योग्यताओं का अंतर प्रकट हो जाएगा। अपने पिता के आदेश पर अमरसिंह और जयसिंह दोनों कौशिक राजकुमारी के स्वयंवर में भाग लेने चले गये।

स्वयंवर में अनेक देशों के राजकुमार आये थे। अमरसिंह और जयसिंह ने उन सबके साथ अलग-अलग स्पर्धा की और उन सबको हराकर दोनों ने समान विजय प्राप्त की। अंत में जब उन दोनों के बीच स्पर्धा हुई, तब घोड़े की सवारी और खड्ग-युद्ध में अमरसिंह विजयी निकला, किंतु मल्ल युद्ध और हाथी की सवारी में जयसिंह सफल निकला। इस प्रकार भी दोनों की विजय संख्या समान थी।

कौशिक राजा यह निर्णय नहीं कर पाया कि उन दोनों युवकों में से किसके साथ अपनी पुत्री का विवाह करे।

उसने अपने निर्णय की घोषणा करने के लिए तीन दिन की अवधि रखी और सब राजकुमारों को अपने निवासों में भेज दिया। इसके बाद कौशिक ने अपने मंत्रियों से परामर्श करके एक ढिंढोरा पिटवा दिया। जो युवक यह बता देगा कि अमरसिंह और जयसिंह में कौन अधिक योग्य है, उसके साथ अपनी दूसरी पुत्री का विवाह

करके उसे आधा राज्य दिया जायेगा।

इस घोषणा के दूसरे दिन एक मुनि एक शिष्य को साथ लेकर दरबार में आया और बोला-"राजन, आपकी पुत्री के विवाह को लेकर जो समस्या उत्पन्न हो गयी है, उसे मेरा शिष्य हल करेगा।

राजा ने पूछा-"वह हल कैसा है?"

इस पर मुनि के शिष्य ने राजा से यों कहा-"राजन, अमरसिंह खड्ग युद्ध और घोड़े की सवारी में जयसिंह से अधिक योग्यता रखता है, मगर हाथी की सवारी और मल्ल युद्ध में कम। लेकिन क्या हाथी पर रहनेवाले खड्गविहीन वीर की अपेक्षा घोड़े पर सवार खड्गवाले वीर कहीं अधिक नहीं है? अलावा इसके घोड़ा हाथी पर उछल कर जा सकता है, जब कि हाथीवाला वीर, घोड़े पर सवार खड्ग रखनेवाले वीर को किसी भी हालत में मार नहीं सकता, मगर हाथी पर रहनेवाले मल्ल को खड्गधारण करनेवाला अश्वारोही आसानी से मार सकता है। इसलिए जयसिंह की अपेक्षा अमरसिंह ही अधिक योग्य है!"

इस तर्क को सब लोगों ने स्वीकार किया। राजा भी यह सोचकर तृप्त हुआ कि उसकी समस्या हल हो गयी है।

तुरंत मुनि तथा उसके शिष्य अपने बेष हटाकर असली रूप में प्रतयक्ष हुए। मुनि का बेष अमरसिंह तथा शिष्य का बेष जयसिंह ने धारण किया था।

कौशिक राजा ने अपनी दो कन्याओं का विवाह दोनों राजकुमारों के साथ संपन्न करके जयसिंह को आधा राज्य सौंप दिया।

इसके साथ मगध देश की समस्या भी हल हो गयी। अतः मगध राजा ने अमरसिंह का राज्याभिषेक किया।

वाक्य बनाओ !

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

तुम एक सामान्य पोस्टकार्ड पर इसे लिख कर इस पते पर भेज सकते हो :

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

''वन उपवन की मैं नन्ही सी बाला-मयूरी
तन और मन के लिए योग है बहुत जरूरी''

बधाइयाँ

मार्च अंक की पुरस्कार विजेता हैं :

सुनीता गायकवाड़
सिविल लाइन, अवस्थी,
कॉम्प्लेक्स के पीछे, गजाननाय बिल्डिंग,
बैतूल, (मध्य प्रदेश)

चंदामामा वार्षिक शुल्क

भारत में १२०/- रुपये डाक द्वारा

Payment in favour of CHANDAMAMA INDIA LIMITED. For details address your enquiries to:
New 82 (old 92), Defence Officers Colony, Ekkattuthangal, Chennai - 600 097.